

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार



বাইজৰ কথা বাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 16 October 2026 :: Year-1 Vol-40 Issue-19 :: शुक्रवार। 9 अक्टूबर 2026। शक संवत 1948। आश्विन। शुक्ल। षष्ठी। :: पृष्ठ-20। मूल्य-15 रुपए

जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

पंडालों में शक्ति की जय

दुर्गापूजा के दिनों में पूरा समाज शक्ति की तलाश में निकल पड़ता है। कोई मां दुर्गा की प्रतिमा में शक्ति देखता है, कोई शस्त्रों में, कोई मंत्रों में और कोई महिषासुर पर देवी की विजय में। लेकिन एक प्रश्न है, जो हर वर्ष उत्सव के शोर में दब जाता है-जिस शक्ति की हम नौ दिनों तक आराधना करते हैं, क्या उसे अपने जीवन में उतारने का साहस भी रखते हैं?

देवी दुर्गा की कथा केवल एक असुर के वध की कहानी नहीं है। यह उस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है, जो अपनी ताकत के अहंकार में दूसरों के अस्तित्व को कुचलने लगती है। महिषासुर का अंत हमें याद दिलाता है कि अन्याय कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसके सामने प्रतिरोध की **शेष पृष्ठ 2 पर**

दुर्गोत्सव : भव्य पंडालों से सजा गुवाहाटी

कहीं दशावतार, कहीं जगन्नाथ मंदिर, तो कहीं दक्षिण भारत के स्वर्णगिरि मंदिर की झलक

लाखों के आयोजनों के बीच भीड़ प्रबंधन, यातायात व नागरिक सुविधाएं बनीं बड़ी चुनौती

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

शरद ऋतु के आगमन के साथ गुवाहाटी एक बार फिर दुर्गोत्सव के रंग में रंगने जा रहा है। महानगर के विभिन्न इलाकों में बन रहे आकर्षक पंडाल, कलात्मक प्रतिमाएं, रोशनी की सजावट और सांस्कृतिक कार्यक्रम इस वर्ष भी श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करने की तैयारी में हैं। दुर्गा पूजा 2026 के लिए कई पूजा समितियों ने अपनी थीम और आयोजन बजट की जानकारी सार्वजनिक की है। कहीं धार्मिक स्थापत्य कला को पंडाल का स्वरूप दिया जा रहा है, तो कहीं कृषि संस्कृति और पारंपरिक कलाओं को उत्सव का केंद्र बनाया गया है।

लेकिन इस बार गुवाहाटी की दुर्गा पूजा को केवल भव्यता और सजावट के पैमाने पर देखना पर्याप्त नहीं होगा। आयोजन का वास्तविक मूल्यांकन इस बात से भी होगा कि पूजा समितियां और प्रशासन बढ़ती भीड़, संकरी सड़कों, अग्नि सुरक्षा, यातायात और आपातकालीन सेवाओं की चुनौतियों से किस प्रकार निपटते हैं।



गुवाहाटी : 1 नंबर रामनगर, ज्योतिकुची के पंडाल में स्थापित भव्य प्रतिमा।

पंडालों में दिखेगी देश की विविध सांस्कृतिक विरासत

इस वर्ष गुवाहाटी के कुछ प्रमुख पंडालों की घोषित थीम धार्मिक स्थापत्य और सांस्कृतिक परंपराओं की विविधता को सामने ला रही है।

पानबाजार स्थित रेलवे ट्रैफिक कॉलोनी के युबतीर्थ क्लब की सार्वजनिक दुर्गा पूजा अपने 91वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। समिति ने दशावतार को इस वर्ष की मुख्य थीम बनाया है। पंडाल की संरचना में पुरी के जगन्नाथ मंदिर की स्थापत्य शैली से प्रेरणा ली जा रही है। आयोजकों के अनुसार, इस आयोजन के लिए लगभग 30 लाख रुपए का बजट निर्धारित किया गया है। पंडाल और प्रकाश व्यवस्था के लिए पश्चिम बंगाल से सामग्री मंगाई जा रही है, जबकि मां दुर्गा की प्रतिमा का निर्माण गुवाहाटी के कलाकार कर रहे हैं।

आदाबाड़ी **शेष पृष्ठ 3 पर**

दिल्ली की रामलीला में रावण के साथ जलेगा 30 फुट का 'कॉकरोच'

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

देश की राजधानी दिल्ली में इस वर्ष दशहरा उत्सव के दौरान रामलीला में एक अनोखा दृश्य देखने को मिलेगा। पितमपुरा में आयोजित होने वाली रामलीला में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों के साथ 30 फुट ऊंचे कॉकरोच के पुतले का भी दहन किया **शेष पृष्ठ 5 पर**



बिष्णुपुर दुर्गा पूजा में 199 रुपए का वैकल्पिक टिकट

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

गुवाहाटी की दुर्गा पूजा 2026 में बिष्णुपुर सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति का आयोजन अपनी अनूठी थीम और प्रवेश व्यवस्था को लेकर चर्चा में है। इस वर्ष पूजा समिति ने श्रद्धालुओं के लिए 199 रुपए प्रति व्यक्ति की वैकल्पिक ऑनलाइन टिकट सुविधा शुरू की है। लेकिन इस व्यवस्था को लेकर उठे सवालों के बीच आयोजकों ने स्पष्ट किया है कि पंडाल में प्रवेश के लिए टिकट खरीदना अनिवार्य नहीं है। सामान्य प्रवेश पहले की तरह निःशुल्क रहेगा।

टिकट व्यवस्था का उद्देश्य उन श्रद्धालुओं को अधिक सुविधाजनक दर्शन का विकल्प देना है, जो लंबी कतारों से बचना चाहते हैं। टिकट ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफॉर्म BookMyShow के माध्यम से उपलब्ध **शेष पृष्ठ 7 पर**



आशा कर्मियों के सेवा-समर्पण को सलाम

जन जन विचार
...✍सोयल खेतान, रोहा

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की ओर से संचालित सेवा संकल्प अभियान-2026 के तहत बरपुजिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में 208 आशा कर्मियों और 16 आशा पर्यवेक्षकों को प्रोत्साहन मानदेय और प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने में आशा कर्मियों और पर्यवेक्षकों के योगदान को मान्यता देना था।



बरपुजिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के महकमा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विजय बरपात्र गोहाईं के संचालन में आयोजित समारोह में रोहा सहजिला के सहायक आयुक्त प्रियम ज्योति फुकन ने आशा कर्मियों और पर्यवेक्षकों की भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि आशा कर्मी और आशा पर्यवेक्षक जनस्वास्थ्य व्यवस्था की महत्वपूर्ण आधारशिला हैं। उनकी सेवा, समर्पण और निष्ठा ने जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाई है।

इस अवसर पर डॉ. विजय बरपात्र गोहाईं ने कहा कि आशा कर्मियों और पर्यवेक्षकों के निरंतर प्रयासों से स्वास्थ्य सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने तथा शत-प्रतिशत टीकाकरण के लक्ष्य को हासिल करने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को लोगों तक पहुंचाने में आशा कर्मियों का योगदान विशेष महत्व रखता है। समारोह में प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक (बीपीएम) नाजिया खान, वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी वसंत कुमार बरुवा, प्रखंड सामुदायिक प्रबंधक (बीसीएम) वासु डेका सहित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, आशा कर्मी और आशा पर्यवेक्षक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान आशा कर्मियों और पर्यवेक्षकों के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य में भी जनस्वास्थ्य सेवाओं के प्रति समर्पण के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

भूटान के अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के लिए असम के हातिसार में बनेगा अस्थायी आव्रजन केंद्र

जन जन विचार
...✍गुवाहाटी

भूटान में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम 'प्रोजेक्ट 108' में शामिल होने वाले यात्रियों की आवाजाही सुगम बनाने के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय ने असम के हातिसार को अस्थायी अधिकृत आव्रजन केंद्र के रूप में नामित किया है। इस व्यवस्था से भूटानी नागरिकों के साथ-साथ तीसरे देशों के उन नागरिकों को भी सुविधा मिलेगी, जो कार्यक्रम में भाग लेने के लिए भूटान की यात्रा करेंगे।



यह अंतर्राष्ट्रीय आयोजन भूटान के सरपांग जिले में भारत-असम सीमा के निकट स्थित गेलेफू माइंडफुलनेस सिटी (जीएमसी) में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के तहत एक ही दिन में 108 जांगचुब चोर्टेन यानी बौद्ध स्तूपों का निर्माण और सामूहिक रूप से प्रतिष्ठापन किया जाएगा। इस आयोजन में भूटान के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के अलावा दुनिया भर से बौद्ध भिक्षुओं और शिक्षकों के शामिल होने की उम्मीद है।

हातिसार में अस्थायी आव्रजन सुविधा स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोगों की सीमा पार आवाजाही को सुविधाजनक बनाना है। इससे यात्रियों को निर्धारित प्रक्रिया के तहत आव्रजन संबंधी औपचारिकताएं पूरी करने में मदद मिलेगी। भारत और भूटान के बीच लंबे समय से मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। ऐसे में सीमा पार आवागमन को सुगम बनाने के लिए यह व्यवस्था क्षेत्रीय संपर्क और दोनों देशों के बीच सहयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

पंडालों में शक्ति की जय

संभावना कभी समाप्त नहीं होती। लेकिन आज बुराई के चेहरे बदल गए हैं। कहीं वह स्त्री की स्वतंत्रता पर पहरा है, कहीं जाति और धर्म के नाम पर घृणा, कहीं सत्ता का अहंकार और कहीं कमजोर की पीड़ा के प्रति समाज की सुविधाजनक चुप्पी।

विडंबना देखिए, देवी के हाथों में अस्त्र देखकर हम गौरवान्वित होते हैं, लेकिन अपने आसपास अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने से बचते हैं। मां को शक्ति का प्रतीक मानते हैं, पर बेटियों को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता देने में संकोच करते हैं। पंडालों में सामाजिक एकता के संदेश लिखते हैं, मगर घर लौटकर भेदभाव की दीवारें फिर खड़ी कर देते हैं।

क्या दुर्गापूजा केवल आस्था का उत्सव है, या आत्मपरीक्षण का अवसर भी? यदि यह केवल परंपरा निभाने का आयोजन बनकर रह जाए, तो इसकी आध्यात्मिक शक्ति अधूरी रह जाएगी। देवी की आराधना का अर्थ है-अपने भीतर के भय, लालच, अहंकार और अन्याय के प्रति समझौते को पराजित करना।

इस बार दुर्गापूजा में एक नया संकल्प लिया जाना चाहिए। हम केवल यह न पूछें कि मां से क्या मांगना है; यह भी पूछें कि समाज को बेहतर बनाने के लिए हम क्या बदलने को तैयार हैं। किसी पीड़ित के पक्ष में खड़ा होना, किसी बेटी के सपनों का सम्मान करना, नफरत के विरुद्ध बोलना और अन्याय को देखकर चुप न रहना भी शक्ति की साधना है। देवी का जागरण बहुत हुआ, अब विवेक का जागरण जरूरी है। मां दुर्गा की सबसे बड़ी विजय तब होगी, जब मनुष्य अपने भीतर के महिषासुर को पहचानकर उसे पराजित करेगा। क्योंकि असली शक्ति प्रतिमा में दिखाई जरूर देती है, लेकिन उसका प्रमाण हमारे कर्मों में मिलता है।

राशिफल

16 से 22 अक्टूबर, 2026 ‖ विक्रम संवत 2083-**मास** : आश्विन, **पक्ष** : शुक्ल, **तिथि** :षष्ठी

मेष : कार्यक्षेत्र में आपकी प्रतिभा की सराहना होगी। नए संपर्क भविष्य में लाभ दे सकते हैं। आर्थिक मामलों में सावधानी जरूरी है। पुराने मित्र से मुलाकात मन प्रसन्न करेगी। स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही न बरतें।

वृषभ : इस सप्ताह मेहनत का अच्छा परिणाम मिलेगा। नौकरी में पद और प्रतिष्ठा बढ़ सकती है। व्यापार में नई योजना पर काम शुरू होगा।

मिथुन : रुके हुए काम पूरे होने के योग हैं। नौकरी में अधिकारियों का सहयोग मिलेगा और व्यापार में लाभ के अवसर बनेंगे। निवेश करते समय जल्दबाजी न करें। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। यात्रा लाभदायक हो सकती है।

कर्क : योजनाओं को पूरा करने के लिए धैर्य रखना होगा। कार्यस्थल पर अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक लाभ के योग हैं। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। स्वास्थ्य में सुधार महसूस होगा।

सिंह : नेतृत्व क्षमता के बल पर महत्वपूर्ण कार्य पूरे होंगे। करियर में आगे बढ़ने का अवसर मिल सकता है। धन की स्थिति अच्छी रहेगी, हालांकि खर्च भी बढ़ सकते हैं। दांपत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी।

कन्या : इस सप्ताह मेहनत का अच्छा परिणाम मिलेगा। नौकरी में पद और प्रतिष्ठा बढ़ सकती है। व्यापार में नई योजना पर काम शुरू होगा। परिवार में सुख-शांति रहेगी। भावनात्मक निर्णय लेने से बचें।

तुला : भाग्य का साथ मिलेगा। नौकरी और व्यापार में प्रगति के संकेत हैं। रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यात्रा के योग बन रहे हैं। विद्यार्थियों को मेहनत का अच्छा परिणाम मिलेगा। परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा।

वृश्चिक : सप्ताह मिश्रित परिणाम देने वाला रहेगा। काम का दबाव बढ़ सकता है, लेकिन मेहनत का फल भी मिलेगा। धन संबंधी मामलों में सावधानी रखें। किसी पुराने विवाद को बातचीत से सुलझाने का प्रयास करें।

धनु : नए अवसर सामने आएंगे। नौकरी बदलने या नया काम शुरू करने की सोच रहे हैं तो समय अनुकूल हो सकता है। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रेम संबंधों में निकटता बढ़ेगी। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर।

मकर : करियर के लिहाज से सप्ताह महत्वपूर्ण है। नई जिम्मेदारियां भविष्य में लाभ देंगी। व्यापारियों को नए सौदे मिल सकते हैं। खर्च पर नियंत्रण रखें। घर-परिवार में किसी बुजुर्ग की सलाह उपयोगी साबित होगी।

कुंभ : लंबे समय से चली आ रही समस्या का समाधान मिल सकता है। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों का साथ मिलेगा। आर्थिक लाभ के अवसर आएंगे, लेकिन जोखिम भरे निवेश से बचें। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य को लेकर दिनचर्या व्यवस्थित रखें।

मीन : रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। नौकरी में सकारात्मक बदलाव के संकेत हैं। व्यापार में लाभ हो सकता है। परिवार में किसी शुभ समाचार से खुशी मिलेगी। प्रेम संबंधों में विश्वास बढ़ेगा।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

16 अक्टूबर (शुक्रवार) : बेल वृक्ष आमंत्रण
17 अक्टूबर (शनिवार) : बेल वृक्ष पूजन
18 अक्टूबर (रविवार) : महाष्टमी व्रत
19 अक्टूबर (सोमवार): महानवमी व्रत
20 अक्टूबर (मंगलवार): विजयादशमी

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

दो महीने में सुलझ सकता है असम-अरुणाचल सीमा विवाद!

जन जन विचार
...✍ बिश्वनाथ चारिआली



असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवाद के समाधान की उम्मीद तेज हो गई है। दोनों राज्यों की क्षेत्रीय समितियों की संयुक्त बैठक में विवादित क्षेत्रों की समस्याओं को अगले दो महीने के भीतर सुलझाने की दिशा में निर्णायक पहल करने पर जोर दिया गया। इसके तहत संबंधित विधायक एक महीने के भीतर विवादित इलाकों का दौरा करेंगे और स्थानीय स्तर पर सहमति बनाने का प्रयास करेंगे। पुराने गांवों की जमीन से जुड़े विवादों के समाधान के लिए भूमि के पारस्परिक आदान-प्रदान के विकल्प पर भी विचार किया जा रहा है।

बिश्वनाथ के नए सर्किट हाउस में आयोजित बैठक में असम की ओर से कैबिनेट मंत्री एवं क्षेत्रीय समिति के अध्यक्ष केशव महंत तथा बिश्वनाथ जिले के अभिभावक मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष डॉ. रनोज पेगु शामिल हुए। अरुणाचल प्रदेश का प्रतिनिधित्व कैबिनेट मंत्री एवं क्षेत्रीय समिति के अध्यक्ष बालो राजा ने अन्य विधायकों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ किया।

बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में केशव महंत ने कहा कि कई स्थानों पर दोनों राज्यों के बीच कोई विशेष असहमति नहीं है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में छोटी-मोटी समस्याएं अब भी बनी हुई हैं। कुछ अरुणाचली परिवारों के घर असम की भूमि पर स्थित हैं। इन मामलों को संबंधित जिलों के आयुक्तों और अधिकारियों की मदद से सुलझाने का प्रयास किया जाएगा।

सीमा विवाद के कुछ मामले लंबे समय से बसे गांवों और वहां की जमीन से जुड़े हैं। ऐसे मामलों में स्थानीय लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक समाधान तलाशा जाएगा। महंत के अनुसार, संकेत मिले हैं कि कुछ परिस्थितियों में असम की जमीन छोड़ने के बदले अरुणाचल प्रदेश दूसरी जगह जमीन छोड़ने के विकल्प पर तैयार हो सकता है। हालांकि, इस संबंध में अंतिम सहमति और निर्णय होना अभी बाकी है।

दोनों राज्यों के संबंधित विधायक विवादित क्षेत्रों का दौरा कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेंगे। इसके बाद क्षेत्रीय समितियां फिर से बैठक कर विवादों के समाधान की दिशा में आगे बढ़ेंगी। जिन मामलों को समिति के स्तर पर नहीं सुलझाया जा सकेगा, उन्हें दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों के समक्ष रखा जाएगा।

विवादित क्षेत्रों की स्थानीय समस्याओं के समाधान के साथ स्थायी सीमा निर्धारण भी बैठक का प्रमुख मुद्दा रहा। केशव महंत ने कहा कि दोनों राज्य सरकारें इस संबंध में आवश्यक निर्णय लेंगी और सीमा पर आधिकारिक खंभे स्थापित करने के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग से अनुरोध किया जाएगा।

सीमा का स्पष्ट निर्धारण होने से विवादित क्षेत्रों की पहचान और भूमि संबंधी दावों को व्यवस्थित करने में मदद मिल सकती है। अब दोनों राज्यों के विधायकों के प्रस्तावित दौरों और क्षेत्रीय समितियों की अगली बैठकों पर नजर रहेगी।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

दुर्गोत्सव : भव्य पंडालों से ...

तिनिआली स्थित कामाख्या नगर दुर्गा पूजा समिति अपने 32वें आयोजन में पुरी के जगन्नाथ मंदिर की शैली का पंडाल तैयार कर रही है। समिति ने लगभग 26 लाख रुपए का बजट निर्धारित किया है। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और पारंपरिक ढाक वादन को भी शामिल किया गया है।

इसी तरह, आठगांव सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति ने दक्षिण भारत के श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर की स्थापत्य शैली से प्रेरित 'स्वर्णगिरि' थीम की घोषणा की है। इस आयोजन का अनुमानित बजट 55-60 लाख रुपए बताया गया है। समिति के अनुसार, पंडाल का निर्माण स्थानीय कारीगरों द्वारा किया जा रहा है।

ये तीनों उदाहरण बताते हैं कि दुर्गा पूजा अब धार्मिक अनुष्ठान के साथ-साथ स्थापत्य कला, शिल्प कौशल और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का भी बड़ा मंच बन चुकी है।

12-13 लाख का बजट, 35 फुट ऊंचा पंडाल और किसानों को समर्पित थीम

गुवाहाटी की सुभाष नगर सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति ने इस वर्ष 'नबन्न उत्सव' को अपनी मुख्य थीम बनाया है। समिति अपने 52वें आयोजन में फसल उत्सव, किसानों के श्रम और कृषि संस्कृति को केंद्र में रख रही है। पंडाल की ऊँचाई लगभग 35 फुट और अनुमानित बजट 12-13 लाख रुपए बताया गया है। पंडाल निर्माण में पश्चिम बंगाल और स्थानीय कलाकारों की भागीदारी है।

यह थीम इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि दुर्गा पूजा की रचनात्मकता केवल बड़े धार्मिक स्मारकों की प्रतिकृति तक सीमित नहीं है। कृषि, ग्रामीण जीवन और श्रम की महत्ता को सामने लाने वाले आयोजन भी समाज को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं।

भव्यता की कीमत और स्थानीय अर्थव्यवस्था :

दुर्गा पूजा के बड़े आयोजनों में पंडाल निर्माण, प्रतिमा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि, सजावट और सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर पर्याप्त धन खर्च होता है। युबतीर्थ क्लब, कामाख्या नगर और आठगांव के घोषित बजटों में अंतर आयोजन के पैमाने और उनकी कलात्मक परिकल्पना की विविधता को दर्शाता है।

हालांकि, इन तीन समितियों के बजट को पूरे गुवाहाटी की दुर्गा पूजा का कुल खर्च नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार, बजट का आकार अपने आप में किसी आयोजन की गुणवत्ता या सामाजिक उपयोगिता का प्रमाण भी नहीं है। उत्सव स्थानीय मूर्तिकारों, बढ़ई, बिजली मिस्त्रियों, चित्रकारों, प्रकाश तकनीशियनों, परिवहन कर्मियों, छोटे दुकानदारों और अस्थायी श्रमिकों के लिए काम के अवसर पैदा कर सकता है। लेकिन इन अवसरों का वास्तविक आर्थिक लाभ कितना है, इसे समझने के लिए अलग से आंकड़ों की आवश्यकता होगी। इसलिए जरूरी है कि पूजा समितियां जहाँ संभव हो, स्थानीय कारीगरों और छोटे व्यवसायों को प्राथमिकता दें तथा आयोजन की लागत और वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता बनाए रखें।

भीड़ प्रबंधन : सबसे बड़ी व्यावहारिक चुनौती

पांडु स्थित जय हिंद क्लब की पूजा को लेकर यातायात और भीड़ प्रबंधन की चुनौती पहले ही चर्चा में है। क्लब तक की संकरी सड़क के कारण पिछले वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने पर सड़क पर पैदल चलने वालों और वाहनों की आवाजाही कठिन हो गई थी।

यह मामला एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है, जब किसी पंडाल में बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं, तब आसपास की सड़कें, प्रवेश द्वार और निकास मार्ग उस दबाव को संभालने के लिए कितने तैयार होते हैं?

भीड़ प्रबंधन का अर्थ केवल पुलिसकर्मियों या स्वयंसेवकों की तैनाती नहीं है। इसके लिए प्रवेश और निकास के स्पष्ट रास्ते, भीड़ की दिशा नियंत्रित करने की व्यवस्था, आवश्यकतानुसार वाहनों की आवाजाही पर नियंत्रण, आपातकालीन वाहन के लिए रास्ता और लोगों को सही जानकारी देने वाली संकेतक व्यवस्था जरूरी है।

विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों और दिव्यांग श्रद्धालुओं की सुविधाओं पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि किसी पंडाल के आसपास सड़क सीमित है, तो वहां पहले से बनाई गई यातायात योजना और वैकल्पिक रास्तों की जानकारी जनता तक पहुंचनी चाहिए।

प्रशासन के निर्देश : अब प्रभावी पालन की जरूरत

जिला प्रशासन ने दुर्गा पूजा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी की है। इसमें पंडालों पर सीसीटीवी कैमरे और चौबीसों घंटे निगरानी, संबंधित थाने से अनुमति तथा मुख्य सड़क को अवरुद्ध किए बिना पंडाल स्थापित करने जैसे निर्देश शामिल हैं।

इन निर्देशों का उद्देश्य श्रद्धालुओं की सुरक्षा, यातायात के सुचारु संचालन और आपातकालीन सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना है। लेकिन किसी नियम का जारी होना और उसका वास्तविक पालन होना दो अलग बातें हैं।

पूजा के दिनों में अग्निशमन उपकरणों की उपलब्धता, अस्थायी विद्युत कनेक्शन की सुरक्षा, पर्याप्त निकास मार्ग, प्राथमिक चिकित्सा और स्वच्छता की व्यवस्था पर नियमित निगरानी जरूरी है। आयोजकों को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि सजावट या अस्थायी निर्माण के कारण आपातकालीन रास्ते बंद न हों।

प्रशासन और पूजा समितियों के बीच समन्वय केवल उद्घाटन या औपचारिक निरीक्षण तक सीमित नहीं रहना चाहिए। भीड़ के दबाव के अनुसार व्यवस्था में समय रहते बदलाव करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण और नागरिक सुविधाएँ भी हों प्राथमिकता

दुर्गा पूजा के दौरान सजावट और प्रकाश व्यवस्था उत्सव का आकर्षण बढ़ाते हैं, लेकिन उनके साथ बिजली की खपत, कचरे का निपटान, ध्वनि प्रदूषण और विसर्जन के प्रबंधन पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

जहां संभव हो, पुन: उपयोग की जा सकने वाली सजावटी सामग्री, सुरक्षित विद्युत उपकरण और कचरे को अलग-अलग एकत्र करने की व्यवस्था अपनाई जानी चाहिए। ध्वनि संबंधी नियमों का पालन और विसर्जन स्थलों की स्वच्छता भी आयोजन की जिम्मेदारी का हिस्सा हैं। गुवाहाटी जैसे व्यस्त महानगर में पूजा का सफल आयोजन तभी माना जा सकता है, जब श्रद्धालुओं को उत्सव का आनंद मिले और स्थानीय निवासियों के दैनिक जीवन पर अनावश्यक दबाव कम हो।

संपादकीय

अराजकता की राजनीति?

लोकतंत्र में विपक्ष सरकार का विरोध करने के लिए होता है, संविधान और संवैधानिक संस्थाओं को चुनौती देने के लिए नहीं। लेकिन जब राजनीतिक विरोध मर्यादा की सीमाएं लांघने लगे और संस्थाओं के प्रति अविश्वास को राजनीतिक हथियार बनाया जाने लगे, तब सवाल केवल सत्ता पक्ष और विपक्ष का नहीं, लोकतंत्र की विश्वसनीयता का बन जाता है।

सुप्रीम कोर्ट परिसर में 12 अक्टूबर को हुए विरोध-प्रदर्शन और नारेबाजी के मामले में नोटिस जारी होने के बाद भाजपा ने राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला है। उन्हें 'अराजक' बताना भाजपा की राजनीतिक टिप्पणी है, कोई न्यायिक निष्कर्ष नहीं। फिर भी इस विवाद ने एक बुनियादी सवाल खड़ा किया है-क्या लोकतांत्रिक असहमति का अर्थ संस्थाओं पर दबाव बनाने की कोशिश भी हो सकता है?

राहुल गांधी देश के नेता प्रतिपक्ष हैं। यह पद केवल सरकार की आलोचना करने का अधिकार नहीं, बल्कि संसदीय जिम्मेदारी, राजनीतिक संयम और संवैधानिक मर्यादा निभाने का दायित्व भी सौंपता है। सरकार से सवाल पूछना विपक्ष का धर्म है; लेकिन हर टकराव को जनांदोलन और हर संस्थागत असहमति को राजनीतिक शक्ति-प्रदर्शन में बदल देना लोकतंत्र को मजबूत नहीं करता।

दूसरी ओर, भाजपा को भी समझना होगा कि तीखे विशेषणों से राजनीतिक बहस का स्तर ऊंचा नहीं होता। विपक्ष की आलोचना तथ्यों और तर्कों से होनी चाहिए, न कि केवल व्यक्तिगत हमलों से। न्यायपालिका के मामले में अंतिम कसौटी राजनीतिक आरोप नहीं, न्यायिक प्रक्रिया और उसके निष्कर्ष हैं। लोकतंत्र न सत्ता की जागीर है, न विपक्ष का अखाड़ा। राहुल गांधी हों या भाजपा के नेता-किसी को भी संवैधानिक मर्यादाओं से ऊपर नहीं माना जा सकता।

हूतियों की चुनौती

यमन के हूती विद्रोहियों की चुनौती ने एक बार फिर साबित किया है कि आधुनिक हथियारों और विशाल सैन्य संसाधनों के बावजूद किसी सशस्त्र संगठन को निर्णायक रूप से नियंत्रित करना आसान नहीं है। सऊदी अरब की सुरक्षा चिंताएं, अमेरिका की सीमित सैन्य प्रतिबद्धता और लाल सागर में व्यापारिक मार्गों की अस्थिरता इस संकट को व्यापक क्षेत्रीय चुनौती बनाती हैं। हूतियों की ताकत केवल उनके मिसाइलों और ड्रोन में नहीं, बल्कि यमन की राजनीतिक अस्थिरता, स्थानीय परिस्थितियों और लंबे संघर्ष से अर्जित अनुभव में भी निहित है। अपेक्षाकृत कम लागत वाले हथियारों से महंगी रक्षा प्रणालियों पर दबाव बनाना आधुनिक युद्ध की एक बड़ी चुनौती बन गया है। हालांकि, हूतियों की हर कार्रवाई को ईरान के सीधे नियंत्रण का परिणाम मानना भी वास्तविकता को सरल बनाकर देखने जैसा होगा।

सऊदी अरब के लिए सैन्य कार्रवाई एक विकल्प हो सकती है, लेकिन उसे स्थायी समाधान मानना जोखिमपूर्ण है। अमेरिका, पाकिस्तान और तुर्किये के साथ सुरक्षा सहयोग उपयोगी हो सकता है, किंतु कोई भी गठबंधन राजनीतिक समाधान का विकल्प नहीं बन सकता। आवश्यकता इस बात की है कि सऊदी अरब अपनी रक्षा व्यवस्था मजबूत करने के साथ ईरान से संवाद, समुद्री सुरक्षा में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और यमन में समावेशी राजनीतिक प्रक्रिया को प्राथमिकता दे। लाल सागर में संकट बढ़ने का असर वैश्विक व्यापार और ऊर्जा बाजार पर भी पड़ सकता है।

अनियंत्रित भीड़ 'शिव बारात' नहीं

जन जन विचार

...✍ नीरज कुमार दुबे

भले ही राहुल गांधी ने 12 अक्टूबर 2026 को दिल्ली में अपने राजनीतिक मार्च को 'शिव बारात' कहकर केवल एक उपमा दी हो, लेकिन सवाल यह है कि क्या भगवान शिव की बारात जैसे पवित्र धार्मिक प्रसंग को राजनीतिक विरोध-प्रदर्शन के लिए इस्तेमाल करना उचित था? जिस बारात का संबंध देवाधिदेव महादेव और माता पार्वती के दिव्य विवाह से है, उसे एक राजनीतिक आंदोलन का नाम देते समय क्या उसकी धार्मिक गरिमा और करोड़ों



श्रद्धालुओं की भावनाओं का ध्यान नहीं रखा जाना चाहिए था?

हम आपको याद दिला दें कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने निर्वाचन आयोग और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े मुद्दों पर विपक्ष के मार्च के दौरान कहा था कि यह शिव की बारात है, इसमें कोई भी शामिल हो सकता है। उन्होंने आंदोलन की तुलना भगवान शिव के तांडव से भी की थी। उनका आशय आंदोलन को स्वत:स्फूर्त और सबके लिए खुला बताना था। लेकिन इसी बयान ने धार्मिक प्रतीकों के राजनीतिक इस्तेमाल पर विवाद खड़ा कर दिया है। विश्व हिंदू परिषद ने उनकी टिप्पणी की आलोचना करते हुए सार्वजनिक माफी की मांग की है।

देखा जाए तो यहां सवाल केवल एक उपमा का नहीं, बल्कि उस धार्मिक प्रतीक के अर्थ का है जिसे भारतीय समाज में विशेष श्रद्धा के साथ देखा जाता है। राहुल गांधी को शायद पता नहीं कि शिव बारात कोई सामान्य जुलूस नहीं है। शिवपुराण की रुद्रसंहिता के पार्वतीखंड में भगवान शिव की विवाह-यात्रा का विस्तृत वर्णन मिलता है। अध्याय 40 में शिव की बारात का प्रसंग है। इसके बाद विवाह की तैयारियों, शिव के हिमालय पहुंचने और विवाह-संस्कार का वर्णन आगे के अध्यायों में आता है। अध्याय 48 में पुरोहितों द्वारा तिथि आदि बताए जाने और शुभ समय आने के बाद विवाह-संस्कार प्रारंभ होने का उल्लेख है।

शिव बारात का धार्मिक महत्व इसी दिव्य विवाह से जुड़ा है। इसमें शिवगणों, नंदी, देवताओं और ऋषियों की सहभागिता का वर्णन मिलता है। लोकपरंपरा में भूत-प्रेत और विचित्र रूप वाले गणों के चित्रण ने इस बारात को एक विशिष्ट पहचान दी है। यह शिव के उस स्वरूप की याद दिलाता है जो बाहरी रूप, वैभव और सामाजिक प्रतिष्ठा की सीमाओं से परे है। इसीलिए शिव बारात को केवल लोगों की भीड़, नारेबाजी या किसी राजनीतिक आंदोलन के लिए सुविधाजनक उपमा मान लेना श्रद्धालुओं को असहज कर सकता है। धार्मिक प्रतीक की अपनी गरिमा होती है और उसका इस्तेमाल किस संदर्भ में किया जा रहा है, यह महत्वपूर्ण है।

साथ ही यहां यह सवाल भी उठता है कि क्या शिव बारात किसी भी दिन निकल सकती है? देखा जाए तो हिंदू धर्म में धार्मिक पर्व, विवाह-संस्कार और शोभायात्रा के अपने अलग-अलग नियम और परंपराएं हैं। महाशिवरात्रि भगवान शिव की आराधना का सबसे प्रमुख पर्व है। इस अवसर पर देशभर में शिव बारात निकाली जाती है और शिव-पार्वती विवाह की झांकियां सजाई जाती हैं। वहीं, शास्त्रोक्त विवाह-संस्कार में तिथि, पंचांग और शुभ मुहूर्त का विशेष महत्व होता है। शिवपुराण में भी शिव-पार्वती विवाह के प्रसंग में तिथि और शुभ समय का उल्लेख मिलता है। साथ ही परम्परागत रूप से शिव बारात महाशिवरात्रि के दिन ही निकाली जाती है और देश में शायद ही किसी अन्य दिवसों पर शिव बारात का आयोजन होता हो। सामान्य धार्मिक शोभायात्रा किसी स्थानीय उत्सव या मंदिर की परंपरा के अनुसार अन्य अवसरों पर भी निकाली जा सकती है। इसके विपरीत, यदि आयोजन को विधिवत शिव-विवाह या किसी विशिष्ट पर्व का शास्त्रोक्त अनुष्ठान बताया जा रहा है, तो संबंधित तिथि, पूजा-विधान, मुहूर्त और परंपरा का पालन अपेक्षित है।

साथ ही राहुल गांधी को यह भी समझना चाहिए कि भगवान शिव की बारात में धक्के मारने या कोहनी से दूसरों को मारने या किसी को कॉलर पकड़ कर पीछे धकेलने की कोई परम्परा नहीं है। शिव बारात में भक्ति, श्रद्धा और उत्सव का भाव होता है, न कि किसी को धक्का देने या कोहनी मारकर आगे बढ़ने का। भले ही राहुल गांधी की उपमा का उद्देश्य अपने राजनीतिक मार्च को सबके लिए खुला बताना रहा हो, लेकिन सवाल यह है कि इसके लिए भगवान शिव की बारात जैसे पवित्र प्रसंग को ही क्यों चुना गया? क्या एक राजनीतिक आंदोलन में शामिल भीड़ की तुलना शिव बारात से करना उचित था? और क्या ऐसी तुलना शिव बारात की धार्मिक छवि को एक अनियंत्रित भीड़ के रूप में प्रस्तुत नहीं करती?

बहरहाल, राहुल गांधी के इस बयान ने धार्मिक प्रतीकों के राजनीतिक इस्तेमाल और सनातन परंपराओं के प्रति संवेदनशीलता को लेकर एक गंभीर बहस छेड़ दी है। देखा जाये तो लोकतंत्र में राजनीतिक विरोध का अधिकार सभी को है, लेकिन उस विरोध को व्यक्त करने के लिए करोड़ों लोगों की आस्था से जुड़े प्रतीकों का इस्तेमाल करते समय उनकी गरिमा का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है।



दरभंगा शिक्षक-स्नातक सीटों पर कांग्रेस का जनसंपर्क अभियान तेज



मधुबनी/दरभंगा। दरभंगा शिक्षक एवं स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के चुनाव को लेकर कांग्रेस ने जनसंपर्क अभियान तेज कर दिया है। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ नेता कृष्ण कांत झा 'गुड्डू' ने सहयोगियों के साथ विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों का दौरा कर शिक्षकों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार डॉ. मदन मोहन झा और स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के उम्मीदवार रजनीकांत पाठक के समर्थन में मतदान की अपील की।

शिक्षकों से संवाद के दौरान कृष्ण कांत झा ने डॉ. मदन मोहन झा के व्यक्तित्व, व्यवहार और शिक्षक हितों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि डॉ. झा शिक्षकों के बीच सरल स्वभाव, मधुर व्यवहार और शिक्षक हितों के मुद्दों को लेकर सक्रियता के लिए पहचाने जाते हैं।

कृष्ण कांत झा 'गुड्डू' ने दावा किया कि दरभंगा शिक्षक एवं स्नातक निर्वाचन क्षेत्र की दोनों सीटों पर कांग्रेस उम्मीदवार जीत दर्ज करेंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी संगठन, कार्यकर्ताओं और समर्थकों के सहयोग से चुनाव प्रचार को और व्यापक बनाया जाएगा। अभियान के तहत अधिकाधिक मतदाताओं तक पहुंचकर उम्मीदवारों की प्राथमिकताओं और पार्टी की विचारधारा से उन्हें अवगत कराया जाएगा।

उन्होंने कहा कि शिक्षक एवं स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं का विश्वास पार्टी के लिए महत्वपूर्ण है। कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं से चुनावी अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील भी की गई। जनसंपर्क अभियान में वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुनील कुमार झा, प्रो. अकील अंजुम, पूर्व मुखिया मो. साबिर, विभूति पांडेय और कुलदीप झा सहित कई नेता एवं कार्यकर्ता शामिल रहे।

बिहार में अपराधियों के हौसले बुलंद, कानून का डर नहीं

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार में लगातार सामने आ रही संगीन आपराधिक घटनाओं ने कानून-व्यवस्था और आम लोगों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। आरा में सुबह की सैर पर निकले पूर्व कस्टम अधिकारी राम कुमार सिंह की गोली मारकर हत्या और गोपालगंज में 12 वर्षीय छात्रा संजना कुमारी का शव मिलने की घटनाओं ने लोगों को झकझोर दिया है। इन वारदातों के बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर अपराधियों में कानून का भय कैसे मजबूत किया जाए और आम नागरिकों का सुरक्षा व्यवस्था पर भरोसा कैसे कायम रहे।

भोजपुर जिले के आरा में 15 अक्टूबर की सुबह बाइक सवार हमलावरों ने पूर्व कस्टम अधिकारी राम कुमार सिंह को निशाना बनाया। वह कनकपुरी इलाके में अपने घर के पास सुबह की सैर पर निकले थे। गोलीबारी में उनकी मौत हो गई। पुलिस हत्या के कारणों और आरोपियों की पहचान को लेकर जांच कर रही है। शुरुआती खबरों में जमीन विवाद की आशंका भी सामने आई है, हालांकि हत्या के पीछे की वजह का अंतिम निर्धारण जांच से ही होगा।

दूसरी ओर, गोपालगंज जिले के थावे थाना क्षेत्र के खानपुर अजमत गांव में दो दिन से लापता 12 वर्षीय संजना कुमारी का शव 14 अक्टूबर को एक पुराने मकान के पीछे मिला। परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है और पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। इस घटना ने गांव में आक्रोश पैदा किया। मामले में आरोपों की सत्यता और जिम्मेदार लोगों की पहचान जांच तथा न्यायिक प्रक्रिया से तय होगी।

अपराध पर अंकुश के लिए निष्पक्ष पुलिसिंग जरूरी

इन घटनाओं के बीच कानून-व्यवस्था पर बहस केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। अपराध नियंत्रण के लिए पुलिस की निष्पक्षता, समय पर कार्रवाई और जांच की गुणवत्ता निर्णायक भूमिका निभाती है। यदि किसी मामले में शिकायत पर कार्रवाई देर से होती है, साक्ष्य जुटाने में लापरवाही बरती जाती है या जांच कमजोर रह जाती है, तो पीड़ित परिवार को न्याय मिलने में कठिनाई होती है। इसलिए हर गंभीर मामले में जवाबदेही तय करना जरूरी है। पुलिस को यह सुनिश्चित करना होगा कि हत्या, जमीन विवाद, व्यक्तिगत रंजिश और महिलाओं-बच्चों के विरुद्ध अपराध जैसे मामलों में शुरुआती सूचना मिलते ही प्रभावी कार्रवाई हो। संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त, संदिग्ध गतिविधियों पर निगरानी और स्थानीय स्तर पर शिकायतों की सुनवाई को मजबूत करना भी आवश्यक है।

कमजोर जांच और देर से न्याय की कीमत

अपराध के मामलों में गिरफ्तारी महत्वपूर्ण है, लेकिन केवल गिरफ्तारी से न्याय पूरा नहीं होता। घटनास्थल से वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाना, गवाहों के बयान दर्ज करना, जांच को समयबद्ध ढंग से पूरा करना और अदालत में ठोस साक्ष्य प्रस्तुत करना उतना ही जरूरी है। कमजोर अनुसंधान के कारण यदि आरोपी को संदेह का लाभ मिलता है, तो पीड़ित परिवार का भरोसा टूट सकता है और न्याय व्यवस्था पर सवाल उठते हैं। त्वरित न्याय का अर्थ जल्दबाजी में फैसला सुनाना नहीं, बल्कि निष्पक्ष जांच और कानूनी प्रक्रिया को अनावश्यक देरी से बचाना है। पुलिस, अभियोजन और न्यायालयों के बीच बेहतर समन्वय से ही दोषियों को कानून के दायरे में लाया जा सकता है।

नशा, सामाजिक तनाव और व्यक्तिगत रंजिश की भी पड़ताल जरूरी

अपराध के पीछे एक ही कारण मान लेना उचित नहीं होगा। जमीन संबंधी विवाद, पुरानी दुश्मनी, पारिवारिक तनाव, आर्थिक दबाव और नशे की लत कुछ मामलों में हिंसा को बढ़ावा दे सकते हैं। हालांकि, किसी खास कारण को राज्य में अपराध बढ़ने का प्रमुख कारण बताने के लिए ठोस आंकड़ों और जांच के निष्कर्षों की जरूरत है। शराबबंदी या नशे से जुड़े दावों का मूल्यांकन भी प्रमाणित आंकड़ों के आधार पर होना चाहिए।

जंगली माता की महिमा अपरंपार, नवरात्र में उमड़ती है श्रद्धालुओं की आस्था

शिवहर की रक्षक देवी के रूप में प्रसिद्ध है लक्ष्मीपुर स्थित मंदिर, नवमी पर बलि की परंपरा

जन जन विचार
...✍ संजय गुप्ता, शिवहर

आस्था, लोकविश्वास और पुरानी परंपराओं की अपनी एक अलग पहचान होती है। शिवहर शहर के पुलिस लाइन के निकट लक्ष्मीपुर वार्ड संख्या छह में स्थित जंगली माता मंदिर ऐसा ही एक धार्मिक स्थल है, जहां शारदीय नवरात्र के दौरान श्रद्धालु पूरे भक्तिभाव से माता की पूजा-अर्चना करते हैं। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, जंगली माता को शिवहर शहर की रक्षक देवी के रूप में पूजा जाता है। नवरात्र के अवसर पर मंदिर में दर्शन-पूजन के लिए श्रद्धालुओं का पहुंचना इस धार्मिक स्थल की महत्ता को दर्शाता है।

जंगलों के बीच स्थापित मंदिर की पुरानी स्मृतियां

स्थानीय लोगों के अनुसार, वर्ष 1970 से 1990 के दशक के दौरान जंगली माता मंदिर के आसपास घने जंगल और खेत हुआ करते थे। उस समय इस इलाके में दिन के उजाले में भी जाने को लेकर लोगों के मन में भय रहता था। बताया जाता है कि जीरो माइल चौक से रात के समय माता का अरघा दिखाई देने की मान्यता प्रचलित थी। समय के साथ शिवहर शहर का विस्तार हुआ और आसपास की बसावट बढ़ी, लेकिन जंगली माता के प्रति लोगों की श्रद्धा बनी रही।

स्थानीय धार्मिक मान्यता है कि माता भगवती शिवहर शहर की चारों दिशाओं से रक्षा करती हैं। मंदिर में माता के सातों स्वरूपों के पिंड स्थापित होने की बात भी कही जाती है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि सच्चे मन से माता से प्रार्थना करने पर मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। ये मान्यताएं मंदिर को स्थानीय धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन से जोड़ती हैं।

अष्टमी-नवमी पर विशेष पूजा

शारदीय नवरात्र के दौरान अष्टमी और नवमी का विशेष महत्व माना जाता है। जंगली माता मंदिर में इन दिनों विशेष पूजा-अर्चना की परंपरा रही है। स्थानीय विवरणों में अष्टमी और नवमी के अवसर पर बकरे की बलि दिए जाने की प्रथा का भी उल्लेख मिलता है।

कुएं का जीर्णोद्धार

जंगली माता मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए कुएं का जीर्णोद्धार भी कराया गया था। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, नगर विकास एवं आवास विभाग के तत्वावधान में जल-जीवन-हरियाली योजना के तहत नगर पंचायत शिवहर के पूर्व अध्यक्ष अंशुमान नन्दन सिंह ने यह कार्य कराया था। उस समय वार्ड पार्षद नेहा देवी भी मौजूद थीं। मंदिर परिसर में कुएं के जीर्णोद्धार का उद्देश्य श्रद्धालुओं को पानी की सुविधा उपलब्ध कराना था। धार्मिक स्थलों पर पेयजल और अन्य बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था श्रद्धालुओं के लिए उपयोगी साबित होती है।

साग- सब्जी... मसाला और तेल भी चाहिए

जन जन विचार
...✍ पटना

तेजस्वी यादव ने बताया सम्राट चौधरी को 'विजन-लेस मुख्यमंत्री'



बिहार में खराब कानून-व्यवस्था, बढ़ते अपराध, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए राजद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने गुरुवार को राज्य सरकार पर निशाना साधा। नालंदा में सिपाही की हत्या और आरा में एक पूर्व अधिकारी की हत्या का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार में कानून-व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। प्रदेश में अपराध और अपराधियों का बोलबाला है। बच्चियों, व्यापारियों, युवाओं और बुजुर्गों समेत कोई भी सुरक्षित नहीं है।

तेजस्वी यादव का वार

तेजस्वी यादव ने मीडिया से बातचीत में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पर निशाना साधते हुए कहा कि जिनके पास न कोई विजन है और न ही कोई रोडमैप, उनसे बिहार नहीं संभल रहा है। उन्होंने दावा किया कि आने वाले छह महीनों में अपराध और बढ़ेगा। तेजस्वी ने बेरोजगारी, गरीबी और महंगाई को लेकर भी सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था चौपट हो चुकी है और बिहार सरकार का खजाना खाली है।

सीएम सम्राट पर आरोप

नेता प्रतिपक्ष ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार में फिलहाल ट्रांसफर-पोस्टिंग का खेल चल रहा है। उनके मुताबिक, जो लोग पैसे दे रहे हैं, उन्हें अच्छी जगहों पर तैनाती मिल रही है। उन्होंने मुख्यमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा कि उनमें मुख्यमंत्री पद की गरिमा और इस जिम्मेदारी के अनुरूप ज्ञान की कमी है। राशन व्यवस्था और महंगाई का मुद्दा उठाते हुए तेजस्वी ने कहा कि लोगों को गेहूं और चावल भी सही तरीके से नहीं मिल पा रहा है।

अनाज पर उठाया सवाल

उन्होंने सवाल उठाया कि केवल अनाज मिलने से भोजन की जरूरत पूरी नहीं होती, क्योंकि खाना बनाने के लिए साग-सब्जी, मसाले और तेल भी चाहिए। इन आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतों से आम लोगों की परेशानी का अंदाजा बाजार में जाकर लगाया जा सकता है। वहीं, वैशाली जिले के राघोपुर में हुए नाव हादसे पर तेजस्वी यादव ने गहरा दुख जताया। उन्होंने कहा कि यह बेहद हृदयविदारक घटना है और ऐसा किसी परिवार के साथ नहीं होना चाहिए।

राघोपुर हादसे का जिक्र

हादसे में कई परिवारों के बच्चों की मौत का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इससे पूरी पीढ़ियां प्रभावित हुई हैं। घटनास्थल पर दिखे दृश्य बेहद दर्दनाक थे। तेजस्वी ने हादसे की निष्पक्ष जांच कराने और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पीड़ित परिवार को कम से कम तीन डिसमिल जमीन दी जानी चाहिए।

सीएम को लिखा पत्र

इस मांग को लेकर उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखने की बात भी कही। उन्होंने बताया कि राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव भी इस घटना से काफी दुखी हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने के बावजूद लालू यादव की इच्छा पीड़ित परिवारों से मिलने की थी। तेजस्वी के मुताबिक, गुरुवार को पीड़ित परिवारों की लालू यादव से मुलाकात हुई, जहां उन्होंने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए भरोसा दिलाया कि राजद पीड़ित परिवारों के साथ खड़ा है।

2030 तक बिहार के युवाओं को राज्य में ही रोजगार देने का लक्ष्य

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने वर्ष 2030 से पहले राज्य से बाहर मजदूरी करने जाने वाले युवाओं को बिहार में ही रोजगार उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा है। मुख्यमंत्री के अनुसार, फिलहाल लगभग 12 लाख लोग रोजगार की तलाश में राज्य से बाहर जाते हैं। सरकार उद्योगों के विस्तार और निवेश को बढ़ावा देकर उन्हें स्थानीय स्तर पर काम उपलब्ध कराने की दिशा में प्रयास करेगी।

मुख्यमंत्री ने मुजफ्फरपुर जिले के मोतीपुर प्रखंड स्थित महवल औद्योगिक क्षेत्र में 140.95 करोड़ रुपए की लागत से बने मेगा लेदर, फुटवियर एवं एक्सेसरीज क्लस्टर और साझा सुविधा केंद्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उद्योग विभाग और फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (एफडीडीआई) के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। चौधरी ने 2030 से पहले बिहार में 1,000 मेगावाट क्षमता का डेटा सेंटर विकसित करने का लक्ष्य भी दोहराया। उन्होंने सेमीकंडक्टर, नवीकरणीय ऊर्जा और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने की बात कही।

महिला किसानों का किया सम्मान, आम के पौधे वितरित

जन जन विचार
...✍ शिवहर



राष्ट्रीय महिला किसान दिवस के अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र, शिवहर में जागरूकता एवं सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान महिला किसानों के कृषि क्षेत्र में योगदान को रेखांकित करते हुए प्रतिभागियों को एक-एक आम का पौधा वितरित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य महिला किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रति जागरूक करना, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देना था।

कृषि विज्ञान केंद्र की वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी ने कहा कि बुवाई, रोपाई, पशुपालन, बीज संरक्षण और खाद्य प्रसंस्करण सहित कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने महिला किसानों से वैज्ञानिक प्रशिक्षण और आधुनिक कृषि पद्धतियों का लाभ उठाने की अपील की। कृषि अभियांत्रिकी विशेषज्ञ डॉ. सौरभ शंकर पटेल ने कृषि यंत्रों के उपयोग से महिलाओं के श्रम को कम करने तथा कृषि आधारित उद्यमों से आय बढ़ाने पर जोर दिया। उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. संचिता घोष ने फलदार पौधों के रोपण, वैज्ञानिक बागवानी और पोषण वाटिका के महत्व को बताया। गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. एन.एम.एच. एनलिंग ने पारिवारिक पोषण, स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा पर प्रकाश डाला।

वहीं, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की अधिष्ठाता डॉ. नीलम कुमारी ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर महिला किसानों को वैज्ञानिक ज्ञान, तकनीकी प्रशिक्षण और नवाचार अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के माध्यम से महिला किसानों को सशक्त बनाने, ग्रामीण आजीविका मजबूत करने तथा फलदार वृक्षों के विस्तार और सतत कृषि को प्रोत्साहित करने का संदेश दिया गया।

वेस्टइंडीज के सामने टीम इंडिया की रणनीति बेनकाब

247 रन भी नहीं बचा पाया भारत, 250 का लक्ष्य भी नहीं छू सका!

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट में इन दिनों एक अजीब विरोधाभास दिखाई दे रहा है। एक ओर भारत ने 2025 की चैंपियंस ट्रॉफी और 2026 के टी-20 विश्व कप जैसे बड़े खिताब जीते, तो दूसरी ओर वेस्टइंडीज के खिलाफ मौजूदा टी-20 श्रृंखला में टीम को अपनी रणनीति और गेंदबाजी की कमजोरियों का सामना करना पड़ रहा है। सवाल अब केवल एक मैच की हार का नहीं, बल्कि उस भरोसे का है जिसके आधार पर भारतीय टीम को विश्व क्रिकेट की सबसे मजबूत टीमों में गिना जाता है।

14 अक्टूबर को हैदराबाद में खेले गए चौथे टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मुकाबले में वेस्टइंडीज ने भारत को 24 रन से हराकर पांच मैचों की श्रृंखला 2-2 से बराबर कर दी। मेहमान टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 247/3 का विशाल स्कोर बनाया। जवाब में भारतीय टीम 19.3 ओवर में 223 रन पर सिमट गई। इस जीत के साथ वेस्टइंडीज ने श्रृंखला को निर्णायक मुकाबले तक पहुंचा दिया।

अब 17 अक्टूबर को बेंगलुरु में होने वाला पांचवां मुकाबला केवल श्रृंखला का फैसला नहीं करेगा, बल्कि भारतीय टीम की दबाव में प्रदर्शन करने की क्षमता की भी परीक्षा लेगा।

शाई होप का शतक, भारतीय गेंदबाजी पर प्रहार

हैदराबाद में वेस्टइंडीज की जीत के केंद्र में कप्तान शाई होप रहे। उन्होंने 50 गेंदों पर नाबाद 102 रन बनाकर भारतीय गेंदबाजों की रणनीति को चुनौती दी। उनके साथ अन्य बल्लेबाजों ने भी तेजी से रन बनाए और वेस्टइंडीज को 247 रन तक पहुंचाया।

भारत के लिए समस्या केवल रन अधिक बन जाना नहीं थी। इतने बड़े स्कोर के बावजूद गेंदबाज विपक्षी बल्लेबाजों पर पर्याप्त नियंत्रण स्थापित नहीं कर सके। टी-20 क्रिकेट में हर गेंद का अपना महत्व होता है, लेकिन जब विपक्ष का बल्लेबाज लगातार सीमारेखा पार करने लगे, तो कप्तान और गेंदबाजों के बीच रणनीतिक तालमेल की परीक्षा शुरू हो जाती है।

क्या गेंदबाजों ने अपनी लेंथ में पर्याप्त



बदलाव किया? क्या बल्लेबाजों की ताकत के अनुसार फील्डिंग लगाई गई? क्या विकेट लेने की कोशिश और रन रोकने की रणनीति के बीच सही संतुलन था? इन सवालों का जवाब मैच के विस्तृत आंकड़ों और वीडियो विश्लेषण से मिलना चाहिए।

बल्लेबाजी भी पूरी तरह निर्दोष नहीं

भारत के सामने लक्ष्य कठिन था, लेकिन असंभव नहीं। संजू सैमसन ने 56 रन बनाकर तेज शुरुआत दी। इसके बावजूद भारतीय पारी लगातार दबाव में आती गई। तिलक वर्मा ने 43 रन बनाए, लेकिन मध्यक्रम वेस्टइंडीज के गेंदबाजों के सामने लक्ष्य की गति बनाए रखने में सफल नहीं रहा।

वेस्टइंडीज की ओर से कीमो पॉल ने 41 रन देकर पांच विकेट लिए। उनके प्रदर्शन ने दिखाया कि बड़े लक्ष्य का पीछा करने के लिए केवल तेज शुरुआत पर्याप्त नहीं होती; विकेट बचाना, साझेदारियां बनाना और सही समय पर आक्रमण करना भी जरूरी है।

भारत की हार इसलिए दोहरी समीक्षा मांगती है-पहली, गेंदबाज 247 रन क्यों नहीं रोक सके; दूसरी, बल्लेबाज 248 रन के लक्ष्य तक क्यों नहीं पहुंच पाए।

चार मैच, चार अलग तस्वीरें

मौजूदा श्रृंखला को केवल हैदराबाद की हार से समझना अधूरा होगा। पहले चार मैचों के नतीजे बताते हैं कि दोनों टीमों ने अलग-अलग परिस्थितियों में एक-दूसरे को चुनौती दी है।

पहला टी-20 (लखनऊ) : भारत ने आठ विकेट से जीत दर्ज की।

दूसरा टी-20 (रांची) : वेस्टइंडीज ने 250 रन का लक्ष्य हासिल कर छह विकेट से जीत दर्ज की।

तीसरा टी-20 (इंदौर): भारत ने 14 रन से मुकाबला जीता।

चौथा टी-20 (हैदराबाद): वेस्टइंडीज ने 24 रन से जीत हासिल कर श्रृंखला 2-2 से बराबर कर दी।

इन नतीजों से स्पष्ट है कि भारतीय टीम पूरी श्रृंखला में लगातार विफल नहीं रही है। उसने दो मुकाबले जीते भी हैं। लेकिन दो मैचों में बड़े स्कोर का बचाव न कर पाना और निर्णायक क्षणों में विपक्ष को हावी होने देना ऐसी कमजोरियां हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कटघरे में गंभीर : जिम्मेदारी कितनी?

भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर के सामने सबसे बड़ा सवाल रणनीति की निरंतरता का है। कोच का काम केवल खिलाड़ियों को मैदान पर भेजना नहीं, बल्कि उनकी भूमिकाएं स्पष्ट करना, विपक्ष की कमजोरियों का अध्ययन करना और दबाव की परिस्थितियों के लिए टीम को तैयार करना भी है।

यदि गेंदबाजी बार-बार बड़े स्कोर का बचाव करने में असफल रहती है, तो गेंदबाजी संयोजन, योजनाओं और अभ्यास की समीक्षा आवश्यक है। यदि बल्लेबाजी में विकेटों का पतन लक्ष्य को कठिन बना देता है, तो बल्लेबाजी क्रम और खिलाड़ियों की भूमिकाओं पर भी विचार करना चाहिए।

लेकिन क्या इसके लिए केवल गंभीर जिम्मेदार हैं? नहीं। कप्तान मैदान पर फैसले लेता है, गेंदबाज अपनी योजनाओं को लागू करते हैं, बल्लेबाज परिस्थितियों के अनुसार खेलते हैं और चयनकर्ता टीम का संयोजन तय करते हैं। कोच और कप्तान को जवाबदेह ठहराना उचित है, पर खिलाड़ियों के प्रदर्शन और चयन नीति की समीक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। भारतीय क्रिकेट के सामने इस समय सबसे जरूरी काम किसी एक व्यक्ति को दोषी घोषित करना नहीं, बल्कि बार-बार सामने आने वाली कमजोरियों का समाधान खोजना है। बड़े टूर्नामेंट जीतना महत्वपूर्ण उपलब्धि है, लेकिन नियमित द्विपक्षीय मुकाबलों में रणनीतिक अनुशासन और निरंतरता भी उतनी ही जरूरी है।

वेस्टइंडीज ने भारत को यह याद दिलाया है कि क्रिकेट में प्रतिष्ठा स्कोरबोर्ड पर रन नहीं बनाती और विश्व कप का खिताब अगला मैच नहीं जिताता। मैदान पर हर दिन नई चुनौती होती है, जिसका जवाब प्रदर्शन से देना पड़ता है। 17 अक्टूबर को बेंगलुरु में भारत के सामने मौका होगा कि वह श्रृंखला जीतकर अपनी रणनीति पर भरोसा मजबूत करे। लेकिन यदि वही कमजोरियां दोहराई जाती हैं, तो गंभीर, कप्तान और टीम प्रबंधन से कठिन सवाल पूछे जाना स्वाभाविक होगा।

क्योंकि भारतीय क्रिकेट को केवल खिताबों की चमक नहीं, बल्कि हर प्रारूप और हर मुकाबले में जिम्मेदार, योजनाबद्ध और भरोसेमंद प्रदर्शन की जरूरत है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

बिष्णुपुर दुर्गा पूजा में ...

कराया गया है। समिति ने यह भी कहा है कि टिकट से प्राप्त धनराशि का उपयोग दुर्गा पूजा के आयोजन में किया जाएगा।

टिकट पर आयोजकों की सफाई : टिकट व्यवस्था की चर्चा के बाद यह सवाल उठने लगा कि क्या सार्वजनिक दुर्गा पूजा में अब दर्शन के लिए शुल्क देना होगा। इसके जवाब में समिति ने एक प्रेस वार्ता में स्पष्ट किया कि ऐसा नहीं है। टिकट सुविधा भीड़ को नियंत्रित करने और प्रवेश को अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए शुरू की गई है।

यह व्यवस्था विशेष रूप से बुजुर्ग श्रद्धालुओं, बच्चों के साथ आने वाले परिवारों और उन लोगों के लिए उपयोगी हो सकती है, जिन्हें लंबे समय तक कतार में खड़े रहने में परेशानी होती है। हालांकि, टिकट खरीदने से प्रवेश की शर्तों, प्रतीक्षा समय और उपलब्ध सुविधाओं के बारे में आयोजकों के निर्देशों को समझना जरूरी है।

समिति ने यह भी संकेत दिया है कि यदि ऑनलाइन बुकिंग की संख्या बहुत अधिक हो जाती है, तो इस सुविधा को बंद किया जा सकता है और सामान्य प्रवेश व्यवस्था जारी रखी जा सकती है।

'नागलोक' बनेगा मुख्य आकर्षण : बिष्णुपुर सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति इस वर्ष अपने 76वें आयोजन और प्लेटिनम जुबली समारोह के अवसर पर 'नागलोक' थीम प्रस्तुत कर रही है। पौराणिक नागलोक की कल्पना पर आधारित जल-आधारित पंडाल को इस वर्ष के प्रमुख आकर्षणों में शामिल किया गया है।

आयोजकों की योजना के अनुसार, श्रद्धालुओं को पानी के बीच से नाव द्वारा पंडाल तक पहुंचने और मां दुर्गा के दर्शन करने का विशेष अनुभव मिलेगा। इस व्यवस्था के लिए लगभग दस नावों की तैयारी की जानकारी दी गई है। जो श्रद्धालु नाव से नहीं जाना चाहेंगे, उनके लिए पुल के माध्यम से पहुंचने का विकल्प भी रखा गया है।

यह अनूठी व्यवस्था आयोजन को विशिष्ट बनाती है, लेकिन इसके साथ जल-सुरक्षा, नावों की क्षमता, यात्रियों की संख्या और भीड़ के प्रवाह को नियंत्रित करने की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है।

15 से 20 अक्टूबर तक आयोजन : BookMyShow पर उपलब्ध आयोजन विवरण के अनुसार, बिष्णुपुर सार्वजनिक दुर्गा पूजा 15 से 20 अक्टूबर 2026 तक बिष्णुपुर विद्यानिकेतन हाई स्कूल मैदान, गुवाहाटी में आयोजित होगी। ऑनलाइन टिकट की सूची में 199 रुपए प्रति व्यक्ति का मूल्य दिया गया है। श्रद्धालुओं को यह समझना चाहिए कि यह वैकल्पिक बुकिंग सुविधा है, सामान्य प्रवेश का अनिवार्य शुल्क नहीं।

दशहरे पर जीवंत हुई मिथिला की लोकसंस्कृति सिर पर झिझिया लेकर झूम उठीं बेटियां

जन जन विचार
...✍ संजय गुप्ता, शिवहर

दशहरे के उल्लास के बीच शिवहर में मिथिला की समृद्ध लोकसंस्कृति की मनमोहक छटा देखने को मिली। सिर पर छिद्रयुक्त मिट्टी का घड़ा रखकर झूमती नन्हीं बच्चियों, उनके कंठ से निकलते पारंपरिक झिझिया गीतों और लोकधुनों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। शिवहर पेट्रोल पंप के निकट मिठाई की दुकान के सामने छोटी-छोटी बच्चियां झिझिया गीत गाते हुए देर तक नृत्य करती रहीं। उनकी मासूम अदाओं और लोकपरंपरा के प्रति उत्साह ने राहगीरों का ध्यान आकर्षित किया।

मिथिलांचल की पहचान माने जाने वाले झिझिया लोकनृत्य का दशहरा और शारदीय नवरात्र से गहरा संबंध है। बिहार के मिथिला क्षेत्र के साथ नेपाल के तराई इलाकों में भी प्रचलित यह परंपरा लोकआस्था, सामूहिक सहभागिता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। नवरात्र के दौरान महिलाएं और बच्चियां देवी दुर्गा की आराधना करते हुए झिझिया गीत गाती हैं और पारंपरिक अंदाज में नृत्य करती हैं।

लोकगीतों में रची-बसी मिथिला की पहचान

शिवहर में बच्चियों के समूह ने पारंपरिक लोकगीतों के माध्यम से मिथिला की ग्रामीण संस्कृति की झलक प्रस्तुत की। गीतों में लोकजीवन, लोकविश्वास और पीढ़ियों से चली आ रही मौखिक परंपरा की मिठास सुनाई दी।

माछ मारह्य गेले डयनियाँ बाबा के पोखरिया,
माछ मारह्य गेले डयनियाँ बाबा के पोखरिया,
मारि लैले कतरी मछरिया गे...

जैसे लोकगीत झिझिया की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को सामने लाते हैं। इन गीतों में लोकमान्यताओं के साथ ग्रामीण समाज की कल्पनाएं और परंपरागत जीवन की झलक मिलती है।

सिर पर घड़ा, भीतर दीप और लोकविश्वास

झिझिया नृत्य में परंपरागत रूप से छोटे-छोटे छिद्रों वाले मिट्टी के घड़े का उपयोग किया जाता है। कई स्थानों पर घड़े के भीतर दीपक रखकर उसे सिर पर संतुलित करते हुए महिलाएं और बच्चियां नृत्य करती हैं। घड़े के छिद्रों से छनकर निकलने वाली दीपक की रोशनी इस लोकनृत्य को विशेष आकर्षण प्रदान करती है।

लोकमान्यताओं में झिझिया को बुरी शक्तियों, बुरी नजर और नकारात्मक प्रभावों से रक्षा का प्रतीक माना जाता है। घड़े के छिद्रों को गिनने से जुड़ी मान्यताएं भी इस परंपरा का हिस्सा हैं। हालांकि, इन विश्वासों को लोकपरंपरा और सांस्कृतिक धरोहर के संदर्भ में देखा जाता है।

नई पीढ़ी के हाथों सुरक्षित लोकविरासत

आधुनिकता और बदलती जीवनशैली के बीच शिवहर की नन्हीं बच्चियों द्वारा झिझिया नृत्य प्रस्तुत करना इस बात का संकेत है कि लोकसंस्कृति की जड़ें आज भी समाज में गहरी हैं। ऐसे आयोजन बच्चों को अपनी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ने के साथ-साथ पारंपरिक गीतों, नृत्यों और लोकभाषा को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दशहरे के अवसर पर शिवहर की सड़कों पर झिझिया गीतों की गूंज ने यह संदेश दिया कि त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे हमारी सांस्कृतिक स्मृतियों और सामूहिक विरासत को जीवित रखने का अवसर भी हैं। सिर पर घड़ा रखकर थिरकती नन्हीं बेटियों ने अपने सहज उत्साह से मिथिला की लोकपरंपरा को एक बार फिर जीवंत कर दिया।

बॉक्स ऑफिस पर रजनीकांत का तूफान, 'जेलर 2' की धमाकेदार शुरुआत से 'दृश्यम 3' की रफ्तार पर ब्रेक



सिनेमा के पर्दे पर सितारों की लोकप्रियता जब कमाई में बदलती है, तो बॉक्स ऑफिस के आंकड़े खुद कहानी कहने लगते हैं। 15 अक्टूबर को सिनेमाघरों में पहुंची रजनीकांत की फिल्म 'जेलर 2' ने पहले ही दिन जबरदस्त शुरुआत कर मनोरंजन जगत में हलचल मचा दी। फिल्म की शुरुआती कमाई ने एक बार फिर साबित किया कि रजनीकांत का आकर्षण केवल दक्षिण भारतीय दर्शकों तक सीमित नहीं है, बल्कि देश और विदेश में भी उनके प्रशंसकों का बड़ा आधार है। दूसरी ओर, पहले से शानदार प्रदर्शन कर रही अजय देवगन की 'दृश्यम 3' और लंबे समय से सिनेमाघरों में टिकी 'हनुमान अंश' की कमाई पर भी नई रिलीज का असर दिखाई देने लगा है।

रजनीकांत की फिल्म 'जेलर 2' में एसजे सूर्या, मिथुन चक्रवर्ती, विद्या बालन, राम्या कृष्णनन, सूरज वेंजारामूडु और योगी बाबू जैसे कलाकार भी नजर आते हैं। फिल्म को लेकर पहले से ही उत्सुकता थी, जिसका असर शुरुआती कारोबार में दिखा।

उपलब्ध बॉक्स ऑफिस आंकड़ों के मुताबिक, फिल्म ने पहले दिन भारत में लगभग 59.70 करोड़ रुपए का कारोबार किया। वहीं, इसका शुरुआती वैश्विक संग्रह लगभग 125.25 करोड़ रुपए बताया गया। इन आंकड़ों के साथ फिल्म ने रिलीज के पहले ही दिन दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए का आंकड़ा पार कर लिया। हालांकि, शुरुआती बॉक्स ऑफिस आंकड़े अनुमानित हो सकते हैं और विभिन्न स्रोतों के बीच इनमें अंतर संभव है। फिल्म की वास्तविक व्यावसायिक सफलता का आकलन आने वाले दिनों के प्रदर्शन से अधिक स्पष्ट होगा।

अजय देवगन, तब्बू और जयदीप अहलावत अभिनीत 'दृश्यम 3' ने भी बॉक्स ऑफिस पर उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। 2 अक्टूबर को रिलीज हुई इस फिल्म ने अपने शुरुआती दिनों में दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींचने में सफलता पाई।

रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म ने रिलीज के 14वें दिन यानी 15 अक्टूबर को लगभग 4.25 करोड़ रुपए का कारोबार किया, जबकि इससे पहले बुधवार को इसकी कमाई 5.25 करोड़ रुपए रही थी। इस तरह एक दिन में इसके कारोबार में गिरावट दर्ज की गई। फिल्म का भारत में कुल शुद्ध संग्रह लगभग 333 करोड़ रुपए और वैश्विक कारोबार करीब 515.05 करोड़ रुपए बताया गया है।

'जेलर 2' की मजबूत शुरुआत के बीच 'दृश्यम 3' के सामने दर्शकों का ध्यान बनाए रखने की चुनौती जरूर बढ़ी है। हालांकि, केवल एक दिन की कमाई में गिरावट को फिल्म की लोकप्रियता में स्थायी कमी का संकेत मानना जल्दबाजी होगी। फिल्म की कहानी, दर्शकों की प्रतिक्रिया और आने वाले सप्ताहांत का कारोबार इसकी आगे की दिशा तय करेंगे।

बड़े सितारों की फिल्मों के बीच कम बजट की 'हनुमान अंश' का सिनेमाघरों में लंबे समय तक टिके रहना भी चर्चा का विषय है। रिलीज के लगभग 70 दिन बाद भी फिल्म का प्रदर्शन जारी है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, बुधवार को फिल्म ने करीब 1.25 करोड़ रुपए कमाए, जबकि गुरुवार को इसका कारोबार घटकर लगभग 65 लाख रुपए रह गया। कमाई में गिरावट के बावजूद फिल्म का लंबे समय तक सिनेमाघरों में बने रहना दर्शकों की निरंतर रुचि की ओर संकेत करता है।

दुर्गा पूजा : मां दुर्गा का आशीर्वाद



मां दुर्गा का आशीर्वाद महान,
उनकी कृपा से जग में मिले सम्मान।
उनके प्रेम से जीवन मुस्काए,
हर मन में सुख-शांति छा जाए।
दुर्गा पूजा का पावन त्योहार,
मां के प्रेम का अनुपम उपहार।
भक्ति-श्रद्धा से शीश झुकाएं,
मन के भाव मां को सुनाएं।
मां दुर्गा सब पर कृपा बरसाएं,
हर संकट से हमको बचाएं।
जीवन में सुख-शांति के दीप जलाएं,
सच्चाई की राह पर हमें चलाएं।
मां के चरणों में मिले ठिकाना,
उनकी महिमा जग ने जाना।
जय-जयकार से गूंजे संसार,
मां दुर्गा करें सबका उद्धार।

-गोविंद कुमार विश्वास



ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

Guwahati, 16 October, 2026 Friday :: শুক্রবাৰ, আহিন, শুক্ল পক্ষ, ষষ্ঠী, শকাব্দ ১৯৪৮



গুৱাহাটীত উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ প্ৰথমটো ভিছা আবেদন কেন্দ্ৰ মুকলি, ১৪খন দেশৰ বাবে উপলব্ধ হ'ব সেৱা

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় যাত্ৰাৰ সুবিধা বৃদ্ধিৰ লক্ষ্যৰে গুৱাহাটীত স্থাপন কৰা হ'ল অঞ্চলটোৰ প্ৰথমটো ভিছা আবেদন কেন্দ্ৰ। অসমৰ মুখ্যমন্ত্ৰী ডাঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই বৃহস্পতিবাৰে, ১৫ অক্টোবৰত কেন্দ্ৰটো উদ্বোধন কৰে। এই কেন্দ্ৰৰ জৰিয়তে অসমকে ধৰি উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ আন ৰাজ্যসমূহৰ আবেদনকাৰীয়ে ১৪খন দেশৰ ভিছা আবেদনৰ সেৱা লাভ কৰিব পাৰিব।

বিশ্বজুৰি বিভিন্ন চৰকাৰ আৰু কূটনৈতিক মিছনৰ হৈ ভিছা আবেদন সম্পৰ্কীয় সেৱা আগবঢ়োৱা সংস্থা ভিএফএছ গ্লবেল শ্চদ্দণ্ঠত্ৰ কেন্দ্ৰটো স্থাপন কৰিছে। ইয়াৰ ফলত ভিছাৰ আবেদন দাখিলৰ বাবে অঞ্চলটোৰ বাহিৰলৈ যাত্ৰা কৰিবলগীয়া হোৱা আবেদনকাৰীসকলৰ অসুবিধা হ্ৰাস পাব বুলি আশা কৰা হৈছে।

এই কেন্দ্ৰত অষ্ট্ৰিয়া, চাইপ্ৰাছ, চেক গণৰাজ্য, ইজিপ্ত, ইষ্ট'নিয়া, ফ্ৰান্স, আয়াৰলেণ্ড, ইটালী, জাপান, লাটভিয়া, মাল্টা, মৰহ্লো, ছুইজাৰলেণ্ড আৰু যুক্তৰাজ্যৰ ভিছা আবেদনৰ সেৱা উপলব্ধ হ'ব।

পৰ্যটন, উচ্চ শিক্ষা, ব্যৱসায় আৰু অন্যান্য উদ্দেশ্যে বিদেশলৈ যাব বিচৰা লোকসকল এই সেৱাৰ জৰিয়তে উপকৃত হ'ব বুলি আশা কৰা হৈছে।

কেন্দ্ৰটোৰ উদ্বোধনী অনুষ্ঠানত অসমৰ পৰ্যটন মন্ত্ৰী অজন্তা নেওগ, পৰিবহণ মন্ত্ৰী চৰণ বড়ো আৰু ভিএফএছ গ্লবেলৰ দক্ষিণ এছিয়াৰ মুখ্য কাৰ্যবাহী বিষয়া ইউছমি তালৰাৰ উপস্থিত থাকে। লগতে ছুইজাৰলেণ্ড, চেক গণৰাজ্য, ইটালী আৰু ফ্ৰান্সৰ কূটনৈতিক মিছনৰ প্ৰতিনিধিসকলো অনুষ্ঠানত উপস্থিত আছিল। গুৱাহাটী উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ অন্যতম প্ৰধান বাণিজ্যিক আৰু প্ৰশাসনিক কেন্দ্ৰ। নতুন ভিছা আবেদন কেন্দ্ৰটোৱে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় যাত্ৰাৰ সৈতে জড়িত সেৱাৰ ক্ষেত্ৰত গুৱাহাটীৰ গুৰুত্ব অধিক বৃদ্ধি কৰিব বুলি আশা কৰা হৈছে।

অৰশ্যে, এই কেন্দ্ৰই কেৱল ভিছা আবেদন প্ৰক্ৰিয়াত সহায় কৰিব। ভিছা প্ৰদান বা প্ৰত্যাখ্যানৰ চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত সংশ্লিষ্ট দেশৰ কৰ্তৃপক্ষইহে গ্ৰহণ কৰিব। আবেদন দাখিলৰ বাবে সময় নিৰ্ধাৰণ, প্ৰয়োজনীয় নথি-পত্ৰ আৰু সেৱাৰ মাচুল সম্পৰ্কীয় তথ্য ভিএফএছ গ্লবেলৰ অনুমোদিত মাধ্যমৰ পৰা লাভ কৰিব পাৰিব।

গুৱাহাটীৰ ২০ স্থানত উলম্ব সেউজ দেৱাল নিৰ্মাণৰ পৰিকল্পনা, ভাগদত্ত উৰণসেতুৰ তলত প্ৰকল্পৰ শুভাৰম্ভ



জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

গুৱাহাটীৰ সেউজীয়া আৱৰণ বৃদ্ধি আৰু বায়ুৰ গুণগত মান উন্নত কৰাৰ লক্ষ্যৰে ৰাজ্য চৰকাৰে গ্ৰহণ কৰা পদক্ষেপৰ অংশ হিচাপে মুখ্যমন্ত্ৰী হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই বৃহস্পতিবাৰে দিছপুৰৰ ভাগদত্ত উৰণসেতু-ৰৰ তলত এখন উলম্ব সেউজ দেৱালৰ উদ্বোধন কৰে।

গুৱাহাটী পৌৰ নিগমে ৰাষ্ট্ৰীয় স্বচ্ছ বায়ু কাৰ্যসূচী শ্চত্তুট্টত্তুগ্নৰ অধীনত ৰদ্ৰূপায়ণ কৰা এই প্ৰকল্পৰ মুঠ ব্যয় ৃচ্ছ.জ্জ্বচ কোটি টকা। পৰিকল্পনা অনুসৰি, গুৱাহাটীৰ বিভিন্ন উৰণসেতুৰ তলত মুঠ চণ্ণটা স্থানত এনে উলম্ব সেউজ দেৱাল গঢ়ি তোলা হ'ব। নগৰাঞ্চলত সেউজীয়া পৰিৱেশ বৃদ্ধি কৰাৰ লগতে বায়ুপ্ৰদূষণ হ্ৰাসৰ প্ৰচেষ্টাক শক্তিশালী কৰাই এই পদক্ষেপৰ মূল লক্ষ্য। উৰণসেতুৰ তলৰ অব্যৱহৃদ্ৰাত স্থানসমূহক সেউজীয়া ৰদ্ৰূপ দিয়াৰ জৰিয়তে মহানগৰখনৰ পৰিৱেশ অধিক উন্নত কৰাৰ পৰিকল্পনা কৰা হৈছে।

এইবাৰ ৰেহাই, পৰৱৰ্তী বছৰৰ পৰা ৰাজপথত দুৰ্গাপূজাৰ মণ্ডপত নিষেধ

জন জন বিচাৰ
...✍ শিলং

ৰাজপথত দুৰ্গাপূজাৰ মণ্ডপ নিৰ্মাণক লৈ সৃষ্টি হোৱা বিতৰ্কৰ মাজতে পূব খাছি পাহাৰ জিলাৰ প্ৰশাসনে এইবাৰ মণ্ডপসমূহক ৰেহাই দিছে যদিও ভৰিষ্যতে ৰাজহুৱা পথৰ ওপৰত বাধাৰ সৃষ্টি কৰা এনে ব্যৱস্থা অব্যাহত ৰাখিবলৈ দিয়া নহ'ব বুলি স্পষ্ট কৰি দিছে। জিলা উপায়ুক্ত অভিলাষ বাৰণৰালে এই কথা প্ৰকাশ কৰিছে।

জিলাখনৰ আৰ আৰ কলনী আৰু লাচুমিয়েৰ-লাইটুমখ্ৰা অঞ্চলত পূজাৰ মণ্ডপৰ বাবে যান-বাহনৰ চলাচল ব্যাহত হোৱা আৰু সাধাৰণ ৰাইজে অসুবিধাৰ সন্মুখীন হোৱাৰ অভিযোগ উত্থাপন হোৱাৰ পাছতে এই বিষয়টোৱে গুৰুত্ব লাভ কৰিছে।

উপায়ুক্তগৰাকীয়ে জনোৱা অনুসৰি, স্থানীয় ডৰবাৰ শ্বনং, আৰক্ষী থানা আৰু অন্যান্য সংশ্লিষ্ট পক্ষৰ সৈতে কেইবালানি আলোচনা



কৰা হৈছিল। কিন্তু পূজাৰ প্ৰস্তুতি বহু দূৰ আগবঢ়াৰ পাছত আপত্তি উত্থাপন হোৱাত এইবাৰ মণ্ডপসমূহ বিকল্প স্থানলৈ স্থানান্তৰ কৰাটো কঠিন হৈ পৰে। সংশ্লিষ্ট ডৰবাৰ শ্বনঙৰ সৈতে আলোচনাৰ পাছত লোকনিৰ্মাণ বিভাগে প্ৰদান কৰা অনাপত্তি প্ৰমাণপত্ৰৰ চৰ্ত অনুসৰি এইবাৰৰ নিৰ্মাণকাৰ্য চলাই নিয়াৰ অনুমতি দিয়া হৈছে।

উল্লেখ্য যে, জিলাখনত মুঠ ৬৯টা দুৰ্গাপূজাৰ মণ্ডপ আছে। ইয়াৰে পৰম্পৰাগতভাৱে কেৱল এটা মণ্ডপে-মূলতঃ আৰ আৰ কলনীৰ মণ্ডপে-লোকনিৰ্মাণ বিভাগৰ পথৰ একাংশ ব্যৱহাৰ কৰি আহিছে বুলি উপায়ুক্তগৰাকীয়ে জানিবলৈ দিয়ে।

আনহাতে, পূজাৰ দিনকেইটাত যান-জঁট নিয়ন্ত্ৰণৰ বাবে আৰক্ষীৰ সৈতে সমন্বয় ৰক্ষা কৰা হৈছে। যান-বাহনৰ চলাচল নিয়ন্ত্ৰণ আৰু পথ পৰিৱৰ্তনৰ সময় তথা পৰিসৰ কম কৰিবলৈ পৰ্যাপ্ত যান-বাহন আৰক্ষী মোতায়েন কৰা হ'ব।

প্ৰশাসনে পূজা সমিতিসমূহক আগন্তুক বছৰবোৰত বিকল্প স্থানৰ পৰিকল্পনা কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে, যাতে ধৰ্মীয় উৎসৰৰ আনন্দ অক্ষুণ্ণ থকাৰ লগতে সাধাৰণ ৰাইজৰ যাতায়াততো ব্যাঘাত নজন্মে।

হাৰিপৰা আলিত মৃত্যুফান্দ, যিকোনো মুহূর্ততে ঘটিব পাৰে ভয়ংকৰ দুর্ঘটনা



জন জন বিচাৰ
...✍ নয়নমণি ফুকন নাজিৰা

এটা বৃহৎ গাঁত, এখন বিধ্বস্ত পথ আৰু যিকোনো মুহূর্ততে সংঘটিত হ'ব পৰা ভয়ংকৰ দুর্ঘটনাৰ আশংকা শিৱসাগৰ জিলাৰ হাৰিপৰা আলিৰে যাতায়াত কৰা লোকসকলৰ বাবে এতিয়া পথটো যেন মৃত্যুফান্দত পৰিণত হৈছে। বিশেষকৈ হাঁহচৰা লেবাং গাঁৱৰ মাজত পথৰ ঠিক সোঁমাজতে সৃষ্টি হোৱা বৃহৎ গাঁতটোৱে বিপদৰ ঘণ্টা বজোৱাৰ পিছতো সংশ্লিষ্ট বিভাগৰ যেন গা লৰা নাই। দিনৰ পোহৰত গাঁতটো দেখা পোৱা যায় যদিও নিশাৰ আন্ধাৰত ই হৈ পৰে নীৰৱ ঘাতক। ফলত যিকোনো মুহূর্ততে সংঘটিত হ'ব পাৰে ভয়ংকৰ পথ দুর্ঘটনা।

শিৱসাগৰ-শিমলুগুৰি বি.জি. পথৰ হাৰিপৰা তিনি আলিৰ পৰা হাঁহচৰা-বেতবাৰী হৈ ডিমৌ চাৰি আলিক সংযোগ কৰা এই পথটো নাজিৰা ৰাজহ চক্রৰ অন্তর্গত। হাঁহচৰা আৰু বেতবাৰী মৌজাৰ কেইবাটাও স্থানত পথটোৰ অৱস্থা অতি শোচনীয় হৈ পৰিছে। ঠায়ে ঠায়ে সৃষ্টি হৈছে বৃহৎ বৃহৎ গাঁত, আনহাতে লেবাং গাঁৱৰ মাজত পথটোৰ এটা অংশ এচলীয়া হৈ পৰাত যাতায়াত অধিক বিপজ্জনক হৈ উঠিছে।

আটাইতকৈ উদ্বেগজনক বিষয়টো হ'ল, পথৰ এই দুৰৱস্থাৰ কথা যোৱা বছৰতে সংবাদ মাধ্যমত সবিস্তাৰে প্রকাশ পাইছিল। তাৰ পিছত বিভাগীয় কর্তৃপক্ষ আৰু ঠিকাদাৰৰ তৰফৰ পৰা মেৰামতিৰ তৎপৰতা দেখুওৱা হৈছিল যদিও সেয়া স্থায়ী সমাধানত পৰিণত নহ'ল। নিম্নমানৰ নে অপর্যাপ্ত মেৰামতি-সেয়া তদন্তৰ বিষয়; কিন্তু বাস্তৱ ছবিখনে স্পষ্ট কৰি দিছে যে পথটোৰ বিপদ এতিয়াও আঁতৰা নাই। একে স্থানতে পুনৰ বৃহৎ গাঁতৰ সৃষ্টি হোৱাটোৱে মেৰামতিৰ মান আৰু কামৰ স্থায়িত্বক লৈ স্বাভাৱিকতে প্রশ্নৰ অৱতাৰণা কৰিছে।

উল্লেখযোগ্য যে ২০২২ চনত জনৈক গায়নে হাৰিপৰা তিনি আলিৰ পৰা প্রায় ৮.২ কিলোমিটাৰ দৈর্ঘ্যৰ পথটোৰ নির্মাণকার্য সম্পূর্ণ কৰিছিল। কিন্তু নির্মাণৰ কেইবছৰমানৰ ভিতৰতে পথটোৰ বিভিন্ন স্থানত বৃহৎ গাঁতৰ সৃষ্টি হোৱা আৰু পথৰ একাংশ এচলীয়া হৈ পৰাৰ ঘটনাই নির্মাণৰ মানদণ্ড আৰু পৰৱর্তী সময়ৰ তদাৰকীক লৈ প্রশ্ন উত্থাপন কৰিছে। পথটোৰ এনে অৱস্থাৰ বাবে দায়ী কোন, মেৰামতিৰ কাম কিমান গুণগতভাৱে সম্পন্ন হৈছিল আৰু নিয়মীয়া পৰিদর্শন কিয় হোৱা নাই- এই প্রশ্নবোৰৰ উত্তৰ বিচাৰিছে ভুক্তভোগী ৰাইজে।

এই পথটোৰ ওপৰত নির্ভৰশীল লোকৰ সংখ্যাও কম নহয়। প্রতিদিনে অসংখ্য স্কুল-কলেজৰ শিক্ষার্থী, চৰকাৰী-বেচৰকাৰী কর্মচাৰী, ৰোগী আৰু সাধাৰণ যাত্রীয়ে এই বিপদসংকুল পথটোৰে অহা-যোৱা কৰিবলগীয়া হয়। তাৰ ওপৰত বালি-শিল কঢ়িওৱা সৰু-বৰ ডাম্পাৰ আৰু বিভিন্ন সামগ্রী পৰিবহণ কৰা গধুৰ যান-বাহনৰ অবিৰত চলাচলে পথটোৰ ওপৰত অতিৰিক্ত চাপ সৃষ্টি কৰিছে। এনে পৰিস্থিতিত পথটোৰ অৱস্থা অধিক অৱনতি ঘটাৰ আশংকা নুই কৰিব নোৱাৰি।

ইয়াৰ মাজতে চেপন-চূণপোৰা পথৰ নঙলামৰা দলঙেৰে গধুৰ যান-বাহনৰ চলাচল নিষিদ্ধ হৈ থকাত বিকল্প পথ হিচাপে হাৰিপৰা আলিৰ ব্যৱহাৰ বৃদ্ধি পাইছে। ফলত পথটোৰ ওপৰেৰে দৈনিক যথেষ্ট সংখ্যক যান-বাহন চলাচল কৰিবলগীয়া হৈছে। কিন্তু অধিক যান-বাহনৰ চাপ বহন কৰিবলগীয়া এই পথটোৰ মেৰামতি আৰু সুৰক্ষাৰ ক্ষেত্রত সংশ্লিষ্ট কর্তৃপক্ষৰ দৃশ্যমান তৎপৰতাৰ অভাৱক লৈ বাইজৰ মাজত তীব্র অসন্তুষ্টিৰ সৃষ্টি হৈছে।

শিৱসাগৰ জিলাৰ ডিমৌ ক্ষেত্রীয় পথ সংমণ্ডলৰ অধীনস্থ এই পথটোৰ দুৰৱস্থাই কেৱল যাতায়াতৰ অসুবিধাই সৃষ্টি কৰা নাই, ই জনসাধাৰণৰ জীৱন আৰু সুৰক্ষাৰ প্রতিও ভাবুকি কঢ়িয়াই আনিছে। সংবাদ মাধ্যমত বাতৰি প্রকাশ পোৱাৰ পিছতহে বিভাগীয় কর্তৃপক্ষৰ তৎপৰতা দেখা দিয়াৰ অভিযোগে চৰকাৰী ব্যৱস্থাৰ দায়বদ্ধতাক লৈও প্রশ্ন তুলিছে।

দুর্ঘটনা সংঘটিত হোৱাৰ পিছত ব্যৱস্থা গ্রহণ কৰাতকৈ আগতেই বিপদ আঁতৰোৱাটোৱেই প্রশাসনৰ প্রকৃত দায়িত্ব। সেয়েহে ক্ষুব্ধ ৰাইজে হাৰিপৰা আলিৰ বিপজ্জনক গাঁতটো তাৎক্ষণিকভাৱে মেৰামতি কৰা, পথটোৰ সম্পূর্ণ অংশৰ অৱস্থা পৰীক্ষা কৰা আৰু স্থায়ী তথা গুণগত মেৰামতি নিশ্চিত কৰাৰ দাবী জনাইছে। এতিয়া প্রশ্ন এটাই-কোনো লোকৰ জীৱনহানি হোৱাৰ আগতেই সংশ্লিষ্ট বিভাগৰ গা লৰিবনে, নে আন এক দুর্ঘটনাৰ পিছতহে আৰম্ভ হ'ব দায়িত্ব পালনৰ আনুষ্ঠানিকতা?

চাকৰিৰ নামত ধন সংগ্রহৰ অভিযোগ অস্বীকাৰ ডি বি আৰ কোম্পানীৰ অংশীদাৰ ঋতুৰাজ বৰগোহাঁইৰ

জন জন বিচাৰ
...✍ নাজিৰা

অ' এন জি চি অসম সম্পদৰ ঠিকাদাৰী প্রতিষ্ঠান ডি বি আৰ কোম্পানীৰ বিৰুদ্ধে নিবনুৰা যুৱক-যুৱতীক চাকৰি দিয়াৰ নামত ধন সংগ্রহ কৰাৰ অভিযোগ উত্থাপন হোৱাৰ পিছতে অভিযোগ অস্বীকাৰ কৰিছে কোম্পানীটোৰ অংশীদাৰ ঋতুৰাজ বৰগোহাঁয়ে।

মঙলবাৰে নাজিৰাত এখন সংবাদ মেল সম্মেলন কৰি বৰগোহাঁয়ে কয় যে অঞ্জন গগৈয়ে সংবাদ মাধ্যমৰ আগত দাঙি ধৰা ইউ পি আই লেন-দেনৰ তথ্য ২০২৫ চনৰ আগষ্ট মাহৰ, আনহাতে ডি বি আৰ কোম্পানীয়ে ২০২৬ চনৰ জুন মাহতহে অসমত কাম আৰম্ভ কৰিছিল। তেওঁৰ দাবী অনুসৰি, উক্ত ধনৰ লেন-দেন চাকৰিৰ সৈতে জড়িত নাছিল; কোম্পানীৰ পৰা পিছত বর্খাস্ত হোৱা এজন কর্মচাৰীক ধাৰলৈ দিয়া ধন ঘুৰাই দিয়াৰ সৈতে ইয়াৰ সম্পর্ক আছিল।

চাকৰি দিয়াৰ নামত ধন সংগ্রহ



কৰাৰ অভিযোগ সম্পূর্ণ ভিত্তিহীন বুলি উল্লেখ কৰি বৰগোহাঁয়ে অভিযোগ উত্থাপন কৰা অঞ্জন গগৈ আৰু পৰশ জ্যোতি দত্তৰ বিৰুদ্ধে আইনী ব্যৱস্থা গ্রহণ কৰা হৈছে বুলিও জানিবলৈ দিয়ে। তেওঁ লগতে দাবী কৰে যে কোম্পানীটোৱে বহু নিবনুৰাক সংস্থাপন দি আহিছে।

উল্লেখ্য যে, এই অভিযোগসমূহৰ সত্যতা সন্দর্ভত স্বাধীনভাৱে নিশ্চিত তথ্য উপলব্ধ নহয়। অভিযোগ উত্থাপনকাৰী পক্ষৰ বক্তব্য আৰু সংশ্লিষ্ট নথি-পত্র পৰীক্ষাৰ পিছতহে বিষয়টোৰ প্রকৃত সত্য নির্ণয় কৰিব পৰা যাব।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

১৬ অক্টোবৰ ২০২৬ৰ পৰা ২২ অক্টোবৰ ২০২৬ লৈ

মেষ : আধ্যাত্মিক চেতনা বৃদ্ধি। কর্মক্ষেত্রত সুস্থিৰতা থাকিব। বিদ্যার্থীৰ শুভ।

বৃষ: চেষ্টাৰ ক্ষেত্রত বাধাৰ সন্মুখীন হব পাৰে। ধর্মীয় ক্ষেত্রত মনোনিবেশ থাকিব। কর্মব্যস্ততা বৃদ্ধি হব পাৰে।

মিথুন: ব্যৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত শুভ ফল। আকস্মিক কোনো শুভ সংবাদ আহিব পাৰে। পিতৃৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্রতি সচেতন হব।

কর্কট: কর্মদক্ষতাৰ সুনাম অর্জন। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত শুভ ফল। আধ্যাত্মিক ক্ষেত্রত উন্নতিৰ সম্ভাৱনা আছে।

সিংহ: আধ্যাত্মিক চেতনা বৃদ্ধি হব। প্রতিযগিতামূলক কার্য্যত সফলতা লাভ। পত্নীৰ লগত মনোমালিন্য ঘটিব পাৰে।

কন্যা : আর্থিক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। মানসিক সুখ শান্তি বৃদ্ধি। সন্তানৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্রতি সচেতন হব।

তুলা: চেষ্টাৰ সফলতা লাভ। মানসিক উদ্বিগ্নতা বৃদ্ধি হব পাৰে। কর্মক্ষেত্রত আস্তিৰাতাৰ সৃষ্টি হব পাৰে।

বৃশ্চিক: আর্থিক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। চেষ্টাৰ সফলতা অর্জন। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি হব পাৰে।

ধনু : ধর্মীয় ক্ষেত্রত মনোনিবেশ থাকিব। মানসিক উদ্বিগ্নতা বৃদ্ধি হব পাৰে। চেষ্টাৰ ক্ষেত্রত বাধাৰ সন্মুখীন হব পাৰে।

মকৰ: আধ্যাত্মিক কার্য্যৰ লগত জৰিত কার্য্যৰ পৰা লাভ। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত উন্নতি। আদর্কাৰি বাদ বিবাদৰ পৰা আতৰি থাকক।

কুম্ভ : শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্রতি সচেতন হব। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্রত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। সামাজিক কার্য্যৰ পৰা লাভ।

মীন: আধ্যাত্মিক চেতনাৰ দ্বাৰা মানসিক শান্তি অর্জন। সামাজিক মান মর্য্যদা বৃদ্ধি।

- হিতেন শর্মা শাস্ত্রী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

সমাজ-সংস্কৃতি-শিক্ষাৰ বৰ্ণিল শোভাযাত্ৰা

জন জন বিচাৰ
...✍ নাজিৰা

অসমৰ গৌৰৱোজ্জ্বল ঐতিহ্য, সমাজ, সংস্কৃতি আৰু শিক্ষাৰ বৰ্ণিল প্ৰতিফলনেৰে গড়গাঁও ৰাজকাৰেঙৰ বাকৰিৰ পৰা উলিওৱা এক আকৰ্ষণীয় শোভাযাত্ৰাই মুখৰিত কৰি তোলে শিমলুগুৰিৰ ৰাজপথ। সদৌ অসম ছাত্ৰ সস্থাৰ শিৱসাগৰ জিলা সমিতিৰ সপ্তদশ অধিৱেশনৰ অন্তিম দিনা প্ৰায় চাৰি কিলোমিটাৰজোৰা এই শোভাযাত্ৰাত ছাত্ৰ-ছাত্ৰী আৰু ৰাইজৰ ব্যাপক অংশগ্ৰহণে নতুন প্ৰজন্মৰ শক্তি, ঐতিহ্যৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধা আৰু সামাজিক দায়বদ্ধতাৰ ছবি দাঙি ধৰে। একে সময়তে উজনি অসমৰ শিৱসাগৰ, চৰাইদেউ আৰু যোৰহাট জিলাত জুলাই মাহৰ বিধ্বংসী বানৰ কাৰণ নিৰ্ণয়ৰ বাবে অসম চৰকাৰক উচ্চ পৰ্যায়ৰ তদন্ত সমিতি গঠনৰ দাবী জনায় আছুৰ সাধাৰণ সম্পাদক সমীৰণ ফুকনে।

৯ আৰু ১০ অক্টোবৰত দুদিনীয়া কাৰ্যসূচীৰে শিমলুগুৰিত অনুষ্ঠিত শিৱসাগৰ জিলা ছাত্ৰ সস্থাৰ সপ্তদশ অধিৱেশনৰ অন্তিম দিনা দুপৰীয়া শোভাযাত্ৰাটো মুকলি কৰি সমীৰণ ফুকনে কয় যে ছাত্ৰ সমাজে কেৱল শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰতে নহয়, অসমৰ সমাজ, সংস্কৃতি আৰু ঐতিহ্যৰ সংৰক্ষণ তথা বিকাশৰ ক্ষেত্ৰতো গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰি আহিছে। নতুন প্ৰজন্মৰ মাজত অসমৰ গৌৰৱোজ্জ্বল ইতিহাস আৰু সাংস্কৃতিক পৰিচয় জীয়াই ৰখাৰ ক্ষেত্ৰত এনে কাৰ্যসূচীৰ



উজনি অসমৰ তিনিখন জিলাৰ বান পৰিস্থিতিৰ তদন্তৰ দাবী আছুৰ সাধাৰণ সম্পাদক সমীৰণ ফুকনৰ

বিশেষ তাৎপর্য আছে বুলিও তেওঁ উল্লেখ কৰে।

আনহাতে, জুলাই মাহৰ বিধ্বংসী বানে উজনি অসমৰ তিনিখন জিলাত সৃষ্টি কৰা ভয়াৱহ পৰিস্থিতিক লৈ উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰি আছুৰ সাধাৰণ সম্পাদকগৰাকীয়ে কয় যে বানৰ এনে সংহাৰী ৰূপৰ কাৰণ উদঘাটন কৰাটো অত্যন্ত জৰুৰী। ইয়াৰ বাবে অসম চৰকাৰে উচ্চ পৰ্যায়ৰ তদন্ত সমিতি গঠন কৰি প্ৰকৃত কাৰণ নিৰ্ণয় কৰাৰ লগতে ভুক্তভোগী ৰাইজৰ দুৰ্দশা স্থায়ীভাৱে দূৰ কৰাৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিব লাগে। বানত ক্ষতিগ্ৰস্ত লোকসকলক সম্পূৰ্ণ চৰকাৰী সাহায্য প্ৰদান আৰু সাহায্য বিতৰণৰ ব্যৱস্থা সুচাৰুৰূপে সম্পন্ন কৰাৰ বাবেও তেওঁ চৰকাৰৰ প্ৰতি দাবী জনায়।

শিৱসাগৰ জিলাৰ ১৬খন আঞ্চলিক ছাত্ৰ সস্থাৰ সহযোগত আয়োজিত শোভাযাত্ৰাটোত অসমৰ শিক্ষা, সমাজ, সংস্কৃতি আৰু ঐতিহ্যৰ বিভিন্ন দিশ প্ৰতিফলিত হয়। বিশেষকৈ শিৱসাগৰ, চৰাইদেউ আৰু যোৰহাট জিলাক বিধ্বস্ত কৰা প্ৰলয়ংকৰী বানৰ ভয়াৱহতা, বানাক্ৰান্ত লোকৰ আশ্ৰয়ৰ সংকট আৰু উদ্ধাৰ অভিযানৰ দৃশ্য উপস্থাপন কৰি ছাত্ৰ সমাজে ভৰিষ্যতে এনে দুৰ্যোগৰ পুনৰাবৃত্তি ৰোধৰ বাবে ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ আহ্বান জনায়। শোভাযাত্ৰাত নতুন প্ৰজন্মৰ জনপ্ৰিয় অভিনেত্ৰী বৈভৱী গোস্বামী, শ্ৰেয়া ৰবঠাকুৰ আৰু যশস্বী ভূঞাই অংশগ্ৰহণ কৰে।

শোভাযাত্ৰাটো গড়গাঁও ৰাজকাৰেঙৰ বাকৰিৰ পৰা আৰম্ভ হৈ প্ৰায় চাৰি কিলোমিটাৰ অতিক্ৰম কৰি শিমলুগুৰি নাট্যমন্দিৰত অনুষ্ঠিত অধিৱেশনৰ মূল কাৰ্যসূচীস্থলীত উপস্থিত হয়। সন্ধিয়া প্ৰায় এহাজাৰ প্ৰতিনিধিৰ অংশগ্ৰহণেৰে অনুষ্ঠিত প্ৰতিনিধি সভাখন উদ্বোধন কৰে আছুৰ সাধাৰণ সম্পাদক সমীৰণ ফুকনে।

শিৱসাগৰ জিলা ছাত্ৰ সস্থাৰ দুটা কাৰ্যকালৰ সভাপতি মানৰ হাজৰিকাৰ সভাপতিত্বত অনুষ্ঠিত সভাত আছুৰ মুখ্য উপদেষ্টা ডাঃ সমুজ্জ্বল কুমাৰ ভট্টাচাৰ্য, সভাপতি উৎপল শৰ্মা, উপসভাপতি ভৱজিত বেজ বৰুৱা আৰু অভিৱৰ্তন গোস্বামী, সহকাৰী সম্পাদক দীপক শৰ্মা, শিক্ষা সম্পাদিকা নিহাৰিকা শইকীয়া, ধ্ৰুৱজ্যোতি কলিতাকে ধৰি কেন্দ্ৰীয় সমিতিৰ কেইবাগৰাকীও বিষয়ৱবীয়া উপস্থিত থাকে। গড়গাঁও মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰীসকলে পৰি�ৱেশন কৰা সুধাকণ্ঠ ডাঃ ভূপেন হাজৰিকাৰ কালজয়ী গীত 'আজি জীৱন বুটলিবি হাঁহি হাঁহি আহ...'ৰ সমবেত সংগীতেৰে প্ৰতিনিধি সভাৰ শুভাৰম্ভ কৰা হয়।

ইফালে, অধিৱেশন উপলক্ষে ৯ অক্টোবৰত শিৱসাগৰ জিলা ভিত্তিত ভূপেন্দ্ৰ সংগীত আৰু জুবিন সংগীত প্ৰতিযোগিতা অনুষ্ঠিত হয়। দুয়োটা প্ৰতিযোগিতা দুটা শাখাত অনুষ্ঠিত কৰা হয়।

ভূপেন্দ্ৰ সংগীতৰ 'ক' শাখাত চাৰ্লি বৰুৱাই প্ৰথম, জ্যোতিস্মান ফুকনে দ্বিতীয় আৰু জেৰীন চুলতানাই উদগনিমূলক পুৰস্কাৰ লাভ কৰে। 'খ' শাখাত সমৃদ্ধি বৰুৱাই প্ৰথম, জ্যোতিশিখা কাকতিয়ে দ্বিতীয় আৰু ফাৰহিন আখটাৰে উদগনিমূলক পুৰস্কাৰ লাভ কৰে।

একেদৰে জুবিন সংগীতৰ 'ক' শাখাত জ্যোতিস্মান ফুকনে প্ৰথম, চাৰ্লি বৰুৱাই দ্বিতীয় আৰু যুভিকা চক্ৰৱৰ্তীয়ে উদগনিমূলক পুৰস্কাৰ লাভ কৰে। 'খ' শাখাত কল্যাণী ৰাইদঙীয়াই প্ৰথম, তপন তন্তুবায়ে দ্বিতীয় আৰু সমৃদ্ধি বৰুৱাই উদগনিমূলক পুৰস্কাৰ লাভ কৰে। বিজয়ী প্ৰতিযোগীসকলক শিৱসাগৰ জিলা ছাত্ৰ সস্থাৰ তৰফৰ পৰা মানপত্ৰ আৰু নগদ ধনেৰে পুৰস্কৃত কৰা হয়।

সামগ্ৰিকভাৱে, শিৱসাগৰ জিলা ছাত্ৰ সস্থাৰ সপ্তদশ অধিৱেশনে অসমৰ ঐতিহ্য আৰু সাংস্কৃতিক পৰিচয়ৰ প্ৰচাৰৰ লগতে বান সমস্যাৰ স্থায়ী সমাধানৰ দাবীৰে ছাত্ৰ সমাজৰ সামাজিক দায়বদ্ধতাকো উজ্জ্বল কৰি তোলে।

ৰৰক্ষেত্ৰী মহাবিদ্যালয়ত মুখ্যমন্ত্ৰীৰ নিযুত মইনা আৰু নিযুত বাবু আঁচনিৰ প্ৰথম কিস্তিৰ চেক বিতৰণ

জন জন বিচাৰ
...✍ আমজাদ হুছেইন ৰৰক্ষেত্ৰী

নলবাৰী জিলাৰ মুকালমুৱা-নাৰায়ণপুৰত অৱস্থিত ৰৰক্ষেত্ৰী মহাবিদ্যালয়ত ছাত্ৰ-ছাত্ৰী সকলৰ মাজত মুখ্যমন্ত্ৰীৰ নিযুত মইনা আৰু নিযুত বাবু আঁচনিৰ প্ৰথম কিস্তিৰ চেক বিতৰণ কৰা হয়। ছাত্ৰ ছাত্ৰী সকলক আৰ্থিকভাৱে সকাহ দিয়াৰ লগতে স্ত্ৰী-শিক্ষা উন্নত কৰি সমাজত বাল্য বিবাহ ৰোধ কৰাৰ উদ্দেশ্যে অসম চৰকাৰে ৰূপায়ন কৰা এই আঁচনিৰ প্ৰথম কিস্তিৰ চেক বিতৰণ কৰা হয়। ৰৰক্ষেত্ৰী মহাবিদ্যালয়ৰ সভাকক্ষত অনুষ্ঠিত হোৱা চেক



বিতৰণ অনুষ্ঠানত মহাবিদ্যালয়খনৰ ২৪৯০ গৰাকী ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মাজত এই আঁচনিৰ চেক বিতৰণৰ কৰে। মহাবিদ্যালয় খনৰ ১৫৮৭ গৰাকী ছাত্ৰীয়ে নিযুত মইনা আঁচনিৰ আৰু ৯০৩ গৰাকী ছাত্ৰইনিযুত বাবু আঁচনিৰ প্ৰথম কিস্তিৰ চেক লাভ কৰিছে। চেক বিতৰণ অনুষ্ঠানটোত উপস্থিত থাকে নলবাৰী জিলাৰ অতিৰিক্ত আয়ুক্ত কৌস্তুৰ ৰয়, ৰৰক্ষেত্ৰী আঞ্চলিক পঞ্চায়তৰ সভাপতিপ্ৰীতম গোস্বামী, মহাবিদ্যালয় খনৰ অধ্যাপক-অধ্যাপিকা সকলৰ লগতে ছাত্ৰ ছাত্ৰী সকল।

ন-মাটিৰ ফুলপানী বৰুৱা পুখুৰীত পুঙা বৰশী বোৱা প্ৰতিযোগিতা

নাজিৰা। প্ৰথম বাৰৰ বাবে নাজিৰা সমজিলাৰ ন-মাটিৰ ফুলপানী বৰুৱা গাওঁ পঞ্চায়তৰ অধীনত থকা ঐতিহাসিক ফুলপানী বৰুৱা পুখুৰীত মাছ ধৰা প্ৰতিযোগিতাৰ আয়োজন কৰে। পুঙা বৰশী বোৱা প্ৰতিযোগিতাৰ নামেৰে আয়োজন কৰা এই মাছধৰা প্ৰতিযোগিতাৰ মুঠ প্ৰতিযোগী আছিল অৰ্ধশতাধিক। আগতিয়াকৈ কোনো প্ৰচাৰ অবিহনে প্ৰথমবাৰৰ বাবে আয়োজন কৰা এই আয়োজক কমিটিয়ে স্থানীয় প্ৰতিযোগীৰ দ্বাৰাই এই প্ৰতিযোগীতা খন হেছে বুলি সংবাদ মাধ্যমৰ আগত অৱগত কৰে। লগতে আয়োজক সকলে কয় যে ১৫০০ টকাকৈ প্ৰতিযোগিতাৰ অংশগ্ৰহণৰ মাচুল ধাৰ্য্য কৰা হৈছে আৰু মুঠ সংগ্ৰহীত ধনৰ ৫০ শতাংশ ধন প্ৰতিযোগিতাৰ বিজয়ী প্ৰতিযোগী সকলক একাদিকক্ৰমে প্ৰদান কৰা হব। ৰৌ, ৰৱালী, চিলভাৰ কাপ, গ্ৰাছ কাপ আদি বিভিন্ন প্ৰজাতিৰ মাছ এই পুখুৰীৰ পৰা বৰশী বাইপ্ৰতিযোগী সকলে ধৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। এই প্ৰতিযোগিতাত বিজয়ী প্ৰতিযোগী সকল ক্ৰমে প্ৰথম স্থানত লাভ কৰে মুবিন ৰহমান, দ্বিতীয় স্থানত দ্বিপেন দত্ত, তৃতীয় স্থানত ৰঞ্জিত গগৈ আৰু উদগণি বঁটা পাবলৈ সক্ষম হয় আকিব ৰহমান, ধ্ৰুৱজ্যোতি বড়া আৰু মনোজ তেতিয়া। বিজয়ী প্ৰতিজন প্ৰতিযোগীকে এখন মানপত্ৰ আৰু নগদ ধন উপহাৰ হিচাপে প্ৰদান কৰা হয়।

সম্পাদকীয়

প্রতিজন নাগৰিকেই সাংবাদিক হ'লে, বিপন্ন হ'ব সংবাদ মাধ্যমৰ বিশ্বাসযোগ্যতা ?

গণতন্ত্রত মত প্রকাশৰ স্বাধীনতা নাগৰিকৰ মৌলিক অধিকাৰ। কিন্তু এই অধিকাৰৰ অর্থ এইটো নহয় যে হাতত এটা ম'বাইল ফোন থাকিলেই যিকোনো ব্যক্তিয়ে নিজকে সাংবাদিক বুলি দাবী কৰিব পাৰে। শেহতীয়াকৈ দিল্লীত প্রতিবাদৰ সময়ত সাংবাদিকৰ সৈতে হোৱা বুলি অভিযোগ উত্থাপিত দুৰ্ব্যৱহাৰ, মাৰপিট আৰু আটকক লৈ শুনানিৰ সময়ত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে প্রকাশ কৰা উদ্বেগে সংবাদ মাধ্যমৰ স্বাধীনতা আৰু দায়িত্বৰ প্রশ্নটো পুনৰ চর্চালৈ আনিছে।

আজি সামাজিক মাধ্যমৰ যুগত তথ্য প্রচাৰৰ গতি অভূতপূর্ব। এজন সাধাৰণ নাগৰিকেও কোনো ঘটনা পোনপটীয়াকৈ ৰাইজৰ সম্মুখলৈ আনিব পাৰে। ই গণতন্ত্রৰ বাবে ইতিবাচক। কিন্তু যাচাই নকৰা তথ্য, আধৰুৱা ভিডিঅ', উচটনিমূলক বক্তব্য আৰু প্রচাৰৰ নামত অপপ্রচাৰে সমাজত বিভ্রান্তি বিয়পোৱাৰ আশংকাও সমানে বৃদ্ধি কৰিছে।

ইয়াত এটা কথা স্পষ্ট হোৱা উচিত- সাংবাদিকতাৰ পৰিচয় কেৱল কোনো আনুষ্ঠানিক স্বীকৃতি-পত্রত সীমাবদ্ধ নহয়। বহু স্বাধীন সাংবাদিক আৰু ডিজিটেল সংবাদকর্মীয়ে গুৰুত্বপূর্ণ জনস্বার্থৰ বিষয় উত্থাপন কৰি আহিছে। সেয়েহে স্বীকৃতিপ্রাপ্ত সাংবাদিক আৰু স্বাধীন সংবাদকর্মীৰ মাজত পার্থক্য থাকিলেও, তেওঁলোকৰ সুৰক্ষা আৰু নিৰাপত্তাৰ অধিকাৰক উপেক্ষা কৰিব নোৱাৰি।

আনহাতে, সংবাদ সংগ্রহৰ সময়ত আৰক্ষীৰ ক্ষমতাৰ অপব্যৱহাৰ, সাংবাদিকৰ ওপৰত আক্রমণ অথবা কেমেৰাৰ সঁজুলি জব্দ কৰাৰ অভিযোগ উঠিলে নিৰপেক্ষ তদন্ত নিশ্চিত কৰাটো প্রশাসনৰ দায়িত্ব। বিশেষকৈ মহিলা সাংবাদিকৰ সৈতে হোৱা বুলি অভিযোগ উত্থাপিত নির্যাতনৰ ঘটনাক কোনো কাৰণতে লঘু কৰি চাব নোৱাৰি।

গণতন্ত্রত সাংবাদিকতা কোনো অপৰাধ নহয়, আৰু সাংবাদিকৰ পৰিচয়ো আইনৰ ঊর্ধ্বত নহয়। প্রয়োজন হৈছে স্বাধীনতা, জবাবদিহিতা আৰু পেছাদাৰী নৈতিকতাৰ মাজত সুস্থ ভাৰসাম্য। নাগৰিকে প্রশ্ন কৰিব, সাংবাদিকেও সত্যৰ সন্ধান কৰিব; কিন্তু ৰাষ্ট্রই কণ্ঠৰোধৰ সলনি সুৰক্ষা দিব লাগিব। কাৰণ, সংবাদ মাধ্যমৰ স্বাধীনতা দুর্বল হ'লে ক্ষতিগ্রস্ত হয় কেৱল সাংবাদিক নহয়-সমগ্র গণতন্ত্র।

অসমীয়া সাহিত্যৰ এটা যুগক আলোকিত কৰিছিল 'জোনাকী'য়ে

জন জন বিচাৰ

...✍ *বিনয় কলিতা*

ঊনবিংশ শতিকাৰ শেষৰ ফালে উচ্চশিক্ষা গ্রহণৰ বাবে অসমৰ এচাম যুৱ ছাত্র কলিকতালৈ গৈছিল। ব্রিটিছ ভাৰতৰ অন্যতম গুৰুত্বপূর্ণ বৌদ্ধিক কেন্দ্র কলিকতাত তেওঁলোকে বাংলা আৰু ইংৰাজী সাহিত্য, পাশ্চাত্য চিন্তাধাৰা আৰু নিজৰ পৰিচিত জগতখনতকৈ বহু বহল এখন পৃথিৱীৰ সৈতে পৰিচিত হোৱাৰ সুযোগ পাইছিল।

কিন্তু জন্মভূমিৰ পৰা আঁতৰি থকাৰ অভিজ্ঞতাই তেওঁলোকৰ মনত আন এটা উপলব্ধিবো জন্ম দিছিল-অসমীয়া সাহিত্যৰ ভৰিষ্যৎ সুৰক্ষিত কৰিবলৈ হ'লে প্রথমে অসমীয়া ভাষাক শক্তিশালী কৰি তুলিব লাগিব।

১৮৮৮ চনৰ ২৫ আগষ্টত কলিকতাৰ ৬৭, মির্জাপুৰ ষ্ট্রীটত থকা অসমীয়া ছাত্রসকলৰ মেছত অনুষ্ঠিত এখন সভাই এই লক্ষ্য পূৰণৰ বাবে এক সংগঠন গঢ়ি তোলাৰ পথ প্রশস্ত কৰিছিল। সংগঠনটোৰ নাম আছিল 'অসমীয়া ভাষাৰ উন্নতি সাধিনী সভা'। কেইমাহমানৰ পাছতে এই প্রচেষ্টাই সাহিত্যৰ ৰূপ লাভ কৰে।

১৮৮৯ চনৰ ফেব্রুৱাৰী মাহত প্রকাশ পায় 'জোনাকী'।

ই কেৱল এখন আলোচনী নাছিল। ই হৈ পৰিছিল নতুন সাহিত্যিক প্রজন্মৰ চিন্তা-চর্চা আৰু সৃষ্টিশীলতাৰ কেন্দ্রবিন্দু। পৰৱর্তী সময়ত এই আলোচনীৰ নামেই অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাসৰ এটা গুৰুত্বপূর্ণ যুগৰ পৰিচয় হৈ পৰে।

অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাসত 'জোনাকী যুগ'ক প্রায়ে ৰোমাণ্টিকতাবাদৰ যুগ বুলি অভিহিত কৰা হয়। কিন্তু অসমত এই সাহিত্যিক ধাৰাই কিয় ইমান দৃঢ়ভাৱে শিপাবলৈ সক্ষম হৈছিল, সেয়া বুজিবলৈ হ'লে তাৰ আগৰ সংগ্রামখনৰ কথাও জানিব লাগিব।

হেমচন্দ্র বৰুৱা, গুণাভিৰাম বৰুৱা আৰু তেওঁলোকৰ সমসাময়িক সাহিত্যিকসকলে ইতিমধ্যে এই নৱজাগৰণৰ ভেটি নির্মাণ কৰিছিল। বিদ্যালয় আৰু আদালতত অসমীয়া ভাষাৰ পুনৰ প্রৱর্তন আছিল এক গুৰুত্বপূর্ণ বিজয়। তথাপি অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ ওপৰত বাংলা ভাষা-সংস্কৃতিৰ প্রভাৱ যথেষ্ট শক্তিশালী হৈ আছিল। নতুন প্রজন্মৰ সাহিত্যিকসকলে উপলব্ধি কৰিছিল যে অসমীয়া সাহিত্যৰ বিকাশ আৰু অসমীয়া জাতীয় পৰিচয়ৰ শক্তিশালীকৰণ পৰস্পৰ সম্পর্কিত।

অসমীয়া ভাষাৰ উন্নতি সাধিনী সভাৰ লক্ষ্য-উদ্দেশ্যতো এই তাগিদাৰ প্রতিফলন ঘটিছিল। নতুন সাহিত্য ৰচনা কৰাই ইয়াৰ একমাত্র উদ্দেশ্য নাছিল। ভাষাটোক সমৃদ্ধ আৰু সুসংহত কৰা, গ্রন্থ প্রকাশত উৎসাহ যোগোৱা, পুৰণি সাহিত্য সংৰক্ষণ কৰা, সংস্কৃত আৰু অন্যান্য ভাষাৰ গ্রন্থ অনুবাদ কৰা, অসমৰ ইতিহাস আৰু পৰম্পৰাৰ চর্চা কৰা তথা অসমীয়া সাহিত্যৰ উপাদানৰ অভাৱ দূৰ কৰাও আছিল ইয়াৰ অন্যতম লক্ষ্য।

চন্দ্রকুমাৰ আগৰৱালাৰ আর্থিক সহযোগিতাত প্রকাশিত 'জোনাকী'য়ে এই বৃহত্তৰ কার্যসূচীক সাহিত্যিক ৰূপ দিয়াৰ এক গুৰুত্বপূর্ণ মাধ্যম হিচাপে আত্মপ্রকাশ কৰে। আগৰৱালাই আলোচনীখনৰ প্রথম সম্পাদক হিচাপেও দায়িত্ব পালন কৰিছিল।

ইয়াৰ পাছত ঘটিল এক উল্লেখযোগ্য ঘটনা।

নিজৰ ভাষাত এক স্বকীয় সাহিত্য গঢ়ি তুলিবলৈ আগবঢ়া অসমীয়া যুৱ সাহিত্যিকসকলে অনুপ্রেৰণাৰ সন্ধানত দৃষ্টি নিক্ষেপ কৰিছিল পাশ্চাত্য সাহিত্যৰ ফালে।

১৮৮৯ চনলৈকে ইংৰাজী সাহিত্যত ৰোমাণ্টিক আন্দোলনৰ প্রভাৱৰ শীর্ষ সময় পাৰ হৈ গৈছিল। তথাপি প্রকৃতি, সৌন্দর্য, আ�ৰেগ, ব্যক্তিসত্তা আৰু মানৱীয় অনুভূতিক কেন্দ্র কৰি গঢ়ি উঠা এই সাহিত্যিক দৃষ্টিভংগী নতুনকৈ আত্মপ্রকাশ কৰিবলৈ ধৰা অসমীয়া সাহিত্যৰ বাবে বিশেষভাৱে উপযোগী আছিল।

অসমৰ প্রাকৃতিক পৰিৱেশেও এই নতুন সাহিত্যিক সংবেদনশীলতাৰ বিকাশৰ বাবে অনুকূল ভূমি প্রস্তুত কৰিছিল। ইউৰোপৰ বহু অঞ্চলৰ দৰে অসমৰ প্রাকৃতিক দৃশ্যপট তেতিয়াও উদ্যোগীকৰণ আৰু নগৰীকৰণৰ ফলত ব্যাপকভাৱে পৰিৱর্তিত হোৱা নাছিল। প্রকৃতি কেৱল সৌন্দর্য উপভোগৰ বিষয় নাছিল; ই আছিল দৈনন্দিন জীৱন, স্মৃতি আৰু কল্পনাৰ অবিচ্ছেদ্য অংশ।

কিন্তু অসমীয়া ৰোমাণ্টিকতাবাদ কেৱল ৰর্ডছৱর্থ, শ্লেলী বা কীটছৰ অনুকৰণ নাছিল।

'জোনাকী' যুগৰ সাহিত্যিকসকলে ৰোমাণ্টিক চিন্তা আৰু ভাবধাৰা গ্রহণ কৰি তাক নিজৰ ভাষা, সমাজ আৰু জীৱনৰ অভিজ্ঞতাৰে নতুন ৰূপ দিছিল। সাহিত্যত ক্রমাৎ মানুহ আৰু তেওঁৰ চৌপাশৰ পৃথিৱীখন অধিক গুৰুত্ব লাভ কৰিবলৈ ধৰিলে। প্রেম, সৌন্দর্য, প্রকৃতি, আৰেগ আৰু আনন্দৰ সন্ধান সাহিত্যৰ কেন্দ্রীয় বিষয় হৈ উঠিল। একে সময়তে এই সাহিত্যৰ শিপা গভীৰভাৱে অসমীয়া জীৱন আৰু অভিজ্ঞতাৰ মাজত প্রোথিত হৈ থাকিল।

ইয়াৰ ফলত অসমীয়া সাহিত্যৰ সৃষ্টিশীল সম্ভাৱনাৰ পৰিসৰ অভূতপূর্বভাৱে বিস্তৃত হ'ল।

গীতিমূলক কবিতা আৰু কাহিনীমূলক গীতৰ বিকাশ ঘটিল। গদ্য, ব্যংগ আৰু সাহিত্য সমালোচনাৰ নতুন নতুন ৰূপৰ আত্মপ্রকাশ হ'ল। পাশ্চাত্য সাহিত্যৰ প্রভাৱ আৰু থলুৱা পৰম্পৰাৰ সংমিশ্রণে এনে এখন সাহিত্যিক জগতৰ সৃষ্টি কৰিলে, যিখন বহির্বিশ্বৰ প্রতি মুকলি আছিল, অথচ নিজৰ স্বকীয় পৰিচয়ৰ প্রতিও সমানে সচেতন আছিল।

এই ৰূপান্তৰৰ কেন্দ্রত আছিল তিনিগৰাকী বিশিষ্ট সাহিত্যিক-চন্দ্রকুমাৰ আগৰৱালা, লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা আৰু হেমচন্দ্র গোস্বামী।

আলোচনীখনৰ প্রকাশৰ ক্ষেত্রত আগৰৱালাই গুৰুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন কৰিছিল। 'জোনাকী'ৰ জন্মৰ সৈতে জড়িত তেওঁৰ অৱদানে এনে এক সাহিত্যিক পৰিৱর্তনৰ সূচনা কৰিছিল, যাৰ প্রভাৱ আলোচনীখনৰ পৃষ্ঠাৰ সীমা অতিক্রম কৰি বহু দূৰলৈ বিয়পি পৰিছিল।

বেজবৰুৱাই এই সাহিত্যিক জাগৰণক দিছিল এক বিস্তৃত আৰু বৈচিত্র্যপূর্ণ ৰূপ। কবি, সাহিত্যিক আৰু সাংস্কৃতিকব্যক্তিত্ব হিচাপে তেওঁ প্রেম আৰু সৌন্দর্যৰ ৰোমাণ্টিক ধাৰণাক অসমীয়া লোক-সংস্কৃতি, প্রকৃতি আৰু সামাজিক জীৱনৰ সৈতে সংযোগ কৰিছিল। তেওঁৰ কাহিনীমূলক গীতসমূহে অসমীয়া কবিতাত এই ধাৰাৰ বিকাশত বিশেষ অৱদান আগবঢ়াইছিল। তেওঁৰ কবিতাত প্রেমৰ দুটা শক্তিশালী ৰূপ বাৰে বাৰে প্রতিফলিত হৈছিল- প্রিয়জনৰ প্রতি প্রেম আৰু নিজৰ দেশ, মাটি তথা মানুহৰ প্রতি গভীৰ অনুৰাগ।

ইংৰাজী সাহিত্যৰ কেইবাগৰাকীও প্রখ্যাত কবিৰ ৰচনাই বেজবৰুৱাক প্রভাৱিত কৰিছিল। কিন্তু তেওঁ পাশ্চাত্য সাহিত্যৰ কণ্ঠস্বৰ কেৱল পুনৰাবৃত্তি কৰা নাছিল। বৰং সেই সাহিত্যৰ পৰা আহৰণ কৰা অভিজ্ঞতাৰে নিজৰ ভাষাৰ প্রকাশক্ষমতা আৰু সৃষ্টিশীল সম্ভাৱনাক অধিক সমৃদ্ধ কৰিছিল।

হেমচন্দ্র গোস্বামীয়ে এই সময়ছোৱাৰ সাহিত্যিক পৰীক্ষা-নিৰীক্ষাৰ আন এটা দিশক প্রতিনিধিত্ব কৰিছিল। কবি আৰু পণ্ডিত হিচাপে তেওঁ অসমীয়া কবিতাৰ আংগিক আৰু প্রকাশভংগীৰ পৰিসৰ বিস্তৃত কৰাত সহায় কৰিছিল। 'জোনাকী'ত প্রকাশিত তেওঁৰ 'প্রিয়তমাৰ চিঠি'ক অসমীয়া ভাষাৰ প্রথম ছনেট হিচাপে গণ্য কৰা হয়। নতুন নতুন সাহিত্যিক ৰূপৰ পৰীক্ষা-নিৰীক্ষা চলি থকা সময়ছোৱাত ই আছিল এক সৰু অথচ তাৎপর্যপূর্ণ মাইলৰ খুঁটি।

এই পৰীক্ষা-নিৰীক্ষাই আছিল 'জোনাকী'ৰ মূল প্রেৰণা।

আলোচনীখন হৈ পৰিছিল পূব আৰু পশ্চিমৰ সাহিত্যিক পৰম্পৰাৰ মিলনস্থলী। ইংৰাজী আৰু ইউৰোপীয় সাহিত্যৰ প্রভাৱে অসমীয়া ৰচনাত প্রৱেশ কৰিছিল যদিও সেই প্রভাৱক অসমৰ ইতিহাস, প্রকৃতি, লোক-পৰম্পৰা আৰু ভাষাৰ অভিজ্ঞতাৰ মাজেৰে নতুন ৰূপ দিয়া হৈছিল। লক্ষ্য আছিল বাহিৰৰ পৃথিৱীৰ সাহিত্যৰ সৈতে সংযোগ স্থাপন কৰি কম অসমীয়া হৈ পৰা নহয়; বৰং অসমীয়া সাহিত্যক বিশ্বৰ বিভিন্ন ভাষাৰ সাহিত্যৰ সমকক্ষভাৱে প্রতিষ্ঠা কৰাৰ সম্ভাৱনা সৃষ্টি কৰা।

এই আন্দোলন অৱশ্যে চৌপাশৰ পৰিৱর্তিত ৰাজনীতি আৰু সমাজৰ পৰা সম্পূর্ণ বিচ্ছিন্ন নাছিল। জাতীয় চেতনাৰ উত্থান, অসম আৰু বাংলাকে ধৰি বিভিন্ন অঞ্চলৰ সমাজ সংস্কাৰ আন্দোলন তথা ভাৰতৰ স্বাধীনতা সংগ্রামৰ দিশে আগবঢ়া ৰাজনৈতিক জাগৰণে সেই সময়ৰ সাহিত্যিক পৰিৱেশক প্রভাৱিত কৰিছিল। 'জোনাকী' যুগৰ সাহিত্যিকসকলে প্রকৃতি আৰু সৌন্দর্যৰ বন্দনা কৰাৰ লগতে সমাজ, ভাষা আৰু নিজৰ জাতিৰ ভৰিষ্যৎ সম্পর্কেও চিন্তা কৰিছিল। সেয়েহে তেওঁলোকৰ জাতীয়তাবাদ কেৱল ৰাজনৈতিক নাছিল; ই আছিল সাংস্কৃতিকো।

ৰাহুল গান্ধীৰ সৈতে একেখন শাৰীত নেহা বৰা

'ইণ্ডিয়া' মিত্রজোঁটৰ গণতন্ত্র যাত্রাত চর্চাৰ কেন্দ্রবিন্দু ছাত্রনেত্রী নেহা বৰা; ভৱিষ্যৎ ৰাজনৈতিক ভূমিকা লৈ জল্পনা-কল্পনা

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

বিৰোধী ৰাজনীতিৰ শেহতীয়া চর্চাত নতুনকৈ উত্থান ঘটিছে ছাত্রনেত্রী নেহা বৰাৰ। সর্বভাৰতীয় ছাত্র সঙ্থা (AISA)-ৰ সাধাৰণ সম্পাদক নেহা বৰাই কংগ্রেছ নেতা ৰাহুল গান্ধী আৰু প্রিয়ংকা গান্ধী ভদ্রাৰ সৈতে গণতন্ত্রৰ দাবীত উলিওৱা প্রতিবাদী সমদলত অংশগ্রহণ কৰাৰ পিছতে তেওঁক লৈ ৰাজনৈতিক মহলত চর্চা বৃদ্ধি পাইছে। ১২ অক্টোবৰত নতুন দিল্লীৰ বাৰাখাম্বা ৰোডৰ পৰা উচ্চতম ন্যায়ালয়লৈ উলিওৱা এই সমদলত বিৰোধী দলসমূহৰ নেতা-কর্মীৰ সৈতে নেহা বৰাৰ উপস্থিতিয়ে বিশেষ দৃষ্টি আকর্ষণ কৰে।



শিক্ষা আৰু ছাত্র-ছাত্রীৰ অধিকাৰক কেন্দ্র কৰি কাম কৰি অহা নেহা বৰাই শেহতীয়াকৈ ছাত্র ৰাজনীতিৰ পৰিসৰৰ বাহিৰতো নিজৰ উপস্থিতি দৃঢ় কৰিছে। জুলাই মাহত দিল্লীৰ যন্তৰ-মন্তৰত অনুষ্ঠিত প্রতিবাদী কার্যসূচীত অংশগ্রহণ কৰাৰ পিছত তেওঁ ৰাষ্ট্রীয় সংবাদ মাধ্যমৰ চর্চালৈ আহে। পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ সংস্কাৰ আৰু কেন্দ্রীয় শিক্ষামন্ত্রী ধর্মেন্দ্র প্রধানৰ পদত্যাগৰ দাবীত অনুষ্ঠিত প্রতিবাদত তেওঁৰ অংশগ্রহণে তেওঁক অধিক পৰিচিতি প্রদান কৰে।

যন্তৰ-মন্তৰৰ প্রতিবাদৰ পৰা ৰাষ্ট্রীয় চর্চালৈ

প্রতিবেদন অনুসৰি, নেহা বৰাই যন্তৰ-মন্তৰত অনুষ্ঠিত ধর্ণা আৰু অনশন কার্যসূচীত অংশ লৈছিল। এই প্রতিবাদৰ সৈতে জড়িত দাবীসমূহৰ ভিতৰত পৰীক্ষা ব্যৱস্থাৰ সংস্কাৰ আৰু শিক্ষাক্ষেত্রৰ সমস্যাসমূহৰ সমাধানৰ বিষয়টো বিশেষভাৱে উত্থাপন হৈছিল। পৰৱর্তী সময়ত তেওঁ মুখ্য নির্বাচন আয়ুক্ত জ্ঞানেশ কুমাৰৰ পদত্যাগৰ দাবীত চলা প্রতিবাদতো যোগ দিয়ে।

এইদৰে শিক্ষা-কেন্দ্রিক ছাত্র আন্দোলনৰ পৰা বৃহত্তৰ ৰাজনৈতিক বিষয়ত অংশগ্রহণলৈ তেওঁৰ যাত্রাই নতুন চর্চাৰ সৃষ্টি কৰিছে।

ৰাহুল-প্রিয়ংকাৰ সৈতে সমদলত নেহা

১২ অক্টোবৰত 'ইণ্ডিয়া' বিৰোধী মিত্রজোঁটৰ উদ্যোগত অনুষ্ঠিত গণতন্ত্র যাত্রাত ৰাহুল গান্ধী, প্রিয়ংকা গান্ধী ভদ্রা আৰু আন বিৰোধী নেতাৰ সৈতে নেহা বৰাই অংশগ্রহণ কৰে। সমদলত গান্ধী পৰিয়ালৰ সদস্যসকলৰ সৈতে তেওঁৰ উপস্থিতি আৰু আগশাৰীত অৱস্থানৰ ছবিয়ে সংবাদ মাধ্যমত বিশেষ গুৰুত্ব লাভ কৰে।

কংগ্রেছৰ জ্যেষ্ঠ নেতা শশী থাৰুৰেও নেহা বৰাৰ প্রশংসা কৰে। তেওঁৰ মতে, প্রতিবাদৰ সময়ত নেহাই দেখুওৱা সাহস আৰু নিজৰ আদর্শৰ প্রতি প্রতিশ্রুতিয়ে তেওঁক বিশেষ মনোযোগৰ কেন্দ্রলৈ আনিছে। থাৰুৰে লগতে উল্লেখ কৰে যে নেহাৰ সৈতে একেখন বাহনত যাত্রা কৰাৰ সময়ত তেওঁৰ সৈতে সাক্ষাৎ হৈছিল।

কানহাইয়া কুমাৰৰ পথ অনুসৰণ কৰিব নেকি?

নেহা বৰাৰ ৰাজনৈতিক উত্থানৰ সৈতে এতিয়া তুলনা কৰা হৈছে প্রাক্তন জৱাহৰলাল নেহৰু বিশ্ববিদ্যালয় ছাত্র একতা সভাৰ সভাপতি কানহাইয়া কুমাৰৰ।

বাওঁপন্থী ছাত্র ৰাজনীতিৰ পৰা ৰাষ্ট্রীয় পর্যায়লৈ উত্থান ঘটা কানহাইয়া কুমাৰে পিছত ভাৰতীয় কমিউনিষ্ট পার্টি (চিপিআই) ত্যাগ কৰি কংগ্রেছত যোগদান কৰিছিল।

কিন্তু নেহা বৰাৰ ক্ষেত্রত এতিয়ালৈকে কংগ্রেছত যোগদানৰ কোনো নিশ্চিত ঘোষণা প্রকাশ পোৱা নাই। তেওঁ AISA-ৰ সৈতে জড়িত হৈ ছাত্র ৰাজনীতিতেই নিজৰ ভূমিকা অধিক শক্তিশালী কৰিব পাৰে, অথবা বাওঁপন্থী ৰাজনীতিৰ আন মঞ্চত আগবাঢ়িব পাৰে-এইবোৰ বর্তমান কেৱল সম্ভাৰনাৰ বিষয়।

নেহা বৰাৰ শেহতীয়া ৰাজনৈতিক উপস্থিতিয়ে এটা কথা স্পষ্ট কৰিছে-ছাত্র আন্দোলনৰ পৰা বৃহত্তৰ ৰাজনৈতিক মঞ্চলৈ নতুন মুখৰ উত্থানৰ সম্ভাৰনা সদায় থাকে। কিন্তু তেওঁ ভৱিষ্যতে কোন দিশে আগবাঢ়িব, সেয়া নির্ভৰ কৰিব তেওঁৰ সংগঠনগত সিদ্ধান্ত, ৰাজনৈতিক লক্ষ্য আৰু পৰৱর্তী কার্যকলাপৰ ওপৰত।

জ্ঞানেশ কুমাৰৰ সমর্থনত ৰাজপথত যুৱ প্রজন্ম, ভোটাৰ তালিকাক লৈ ৰাহুল গান্ধীৰ অভিযোগৰ প্রমাণ ক'ত?

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

মুখ্য নির্বাচন আয়ুক্ত জ্ঞানেশ কুমাৰক লৈ দেশৰ ৰাজনীতিত চলি থকা সংঘাতৰ মাজতে অসমত বিশেষ নিবিড় ভোটাৰ তালিকা সংশোধন (এছআইআৰ)ৰ সমর্থনত যুৱক-যুৱতী ৰাজপথলৈ ওলাই অহা বুলি এক প্রতিবেদনত দাবী কৰা হৈছে। আনহাতে,



অসমত এছআইআৰৰ সমর্থনত যুৱকৰ সমাৱেশৰ দাবী, নির্বাচন আয়োগক লৈ ৰাজনৈতিক সংঘাত তীব্র

ভোটাৰ তালিকাত অনিয়ম আৰু 'ভোট চুৰি'ৰ অভিযোগক কেন্দ্র কৰি বিৰোধী পক্ষ আৰু নির্বাচন আয়োগৰ মাজৰ সংঘাতেও নতুন মাত্রা লাভ কৰিছে।

প্রতিবেদনটোত ৩,০০০ৰো অধিক যুৱকে জ্ঞানেশ কুমাৰ আৰু এছআইআৰৰ সমর্থনত সমাৱেশত অংশ লোৱা বুলি উল্লেখ কৰা হৈছে। অৱশ্যে, এই সমাৱেশৰ স্থান, আয়োজক আৰু অংশগ্রহণকাৰীৰ সঠিক সংখ্যা স্বাধীনভাৱে নিশ্চিত হোৱা নাই।

উল্লেখযোগ্য যে, ২০২৫ চনৰ ১৭ আগষ্টত মুখ্য নির্বাচন আয়ুক্ত জ্ঞানেশ কুমাৰে কংগ্রেছ নেতা ৰাহুল গান্ধীক ভোটাৰ তালিকাত অনিয়মৰ অভিযোগৰ সমর্থনত সাত দিনৰ ভিতৰত শপতনামাসহ প্রমাণ দাখিল কৰিবলৈ, অন্যথা দেশবাসীৰ ওচৰত ক্ষমা খুজিবলৈ আহ্বান জনাইছিল। এই বক্তব্যই সেই সময়তে ৰাজনৈতিক বিতর্ক সৃষ্টি কৰিছিল।

আনহাতে, নির্বাচন আয়োগৰ নিৰপেক্ষতা আৰু এছআইআৰ প্রক্রিয়াক লৈ বিৰোধী পক্ষই প্রশ্ন উত্থাপন কৰি আহিছে। ১৫ অক্টোবৰ, ২০২৬ত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে এছআইআৰ সম্পর্কীয় অভিযোগৰ পৰিপ্রেক্ষিতত মুখ্য নির্বাচন আয়ুক্তসহ নির্বাচন আয়োগৰ সংশ্লিষ্ট বিষয়াসকলৰ পৰা উত্তৰ বিচাৰিছে।

অসমৰ মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ হিমন্ত বিশ্ব শর্মাই ৰাহুল গান্ধীৰ ৰাজনৈতিক ভূমিকাক সমালোচনা কৰা বুলিও প্রতিবেদনটোত উল্লেখ আছে। অৱশ্যে, এই বিতর্ক কেন্দ্রীয় প্রশ্নটো হৈছে-ভোটাৰ তালিকাৰ শুদ্ধতা কেনেকৈ নিশ্চিত হ'ব আৰু প্রতিজন যোগ্য নাগৰিকে যাতে নিজৰ ভোটাধিকাৰ সাব্যস্ত কৰিব পাৰে, সেয়া কেনেকৈ সুনিশ্চিত কৰা হ'ব?

গণতন্ত্রত নির্বাচন আয়োগৰ বিশ্বাসযোগ্যতা আৰু বিৰোধী পক্ষৰ অভিযোগ-দুয়োটাই তথ্য, স্বচ্ছতা আৰু নিৰপেক্ষ পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত বিচাৰ কৰা উচিত। ৰাজনৈতিক দাবী বা সমর্থনৰ সমাৱেশে নহয়, প্রমাণ আৰু বিশ্বাসযোগ্য প্রক্রিয়াইহে ভোটাৰ তালিকাৰ প্রতি জনসাধাৰণৰ আস্থা শক্তিশালী কৰিব পাৰে।

ধ্রুৱ ৰাঠীৰ বিৰুদ্ধে গোচৰৰ দাবী

নতুন দিল্লী: ইউটিউবাৰ ধ্রুৱ ৰাঠীৰ এক সাক্ষাৎকাৰত ভাৰতীয় আৰক্ষী আৰু সেনাক চৰকাৰৰ বিৰুদ্ধে একত্রিতভাৱে মাত মাতিবলৈ আহ্বান জনোৱা বুলি অভিযোগ উত্থাপিত হোৱাক লৈ বিতর্ক সৃষ্টি হৈছে। উত্তৰ প্রদেশৰ প্রাক্তন আৰক্ষী সঞ্চালকপ্রধান বিক্রম সিঙে এই মন্তব্যক গম্ভীৰ বুলি অভিহিত কৰি চৰকাৰক ৰাষ্ট্রীয় সুৰক্ষা আইনৰ (ৰাসুকা) অধীনত গোচৰ ৰুজু কৰাৰ সম্ভাৰনা পৰীক্ষা কৰিবলৈ দাবী জনাইছে। প্রতিবেদন অনুসৰি, ৰাঠীয়ে সাক্ষাৎকাৰটোত আৰক্ষী আৰু সেনাৰ কর্মীসকলে একেলগে মাত মাতিলে চৰকাৰৰ বাবে পৰিস্থিতি নিয়ন্ত্রণ কৰা কঠিন হ'ব বুলি মন্তব্য কৰিছিল। ইয়াৰ পিছতে প্রাক্তন আৰক্ষী বিষয়াগৰাকীয়ে অভিযোগটোৰ সত্যতা পৰীক্ষা কৰি আইন বিশেষজ্ঞৰ পৰামর্শ অনুসৰি ব্যৱস্থা গ্রহণ কৰিবলৈ কেন্দ্রীয় চৰকাৰক আহ্বান জনায়। বিক্রম সিঙৰ মতে, এনে আহ্বানৰ ক্ষেত্রত প্রযোজ্য আইনৰ অধীনত ব্যৱস্থা গ্রহণৰ প্রশ্ন উত্থাপন হ'ব পাৰে। তেওঁ ভাৰতীয় ন্যায় সংহিতাৰ ১৫৯ নং ধাৰাৰ কথাও উল্লেখ কৰে।

GAURANSHI
INDUSTRIES

Gunika™

Purity in Every Drop, Nature in Every Product.

100% NATURAL

PURE NATURAL GOODNESS







NO ADDITIVES
BOOSTS IMMUNITY
RICH IN ANTIOXIDANTS
ECO FRIENDLY

TEA

NAME	MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD)	ASSAM CTC TEA	ASSAM CTC TEA
SIZE	200gm	250gm	100gm

HONEY



NAME	MORINGA HONEY	TULSI HONEY
SIZE	200gm	200gm



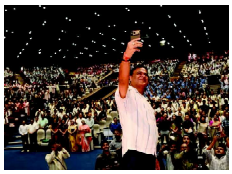
NAME	MUSTARD HONEY	LITCHI HONEY	WILD FOREST HONEY
SIZE	200gm	200gm	200gm

RAW & UNPROCESSED | PURE & NATURAL | DIRECTLY FROM OUR FARMS | TRUSTED BY THOUSANDS

3rd Floor, IIT Road,
Jayguru, Amingaon,
Kamrup, Assam - 781031, India

Contact :
+91-88224 20619

E-Mail :
gauranshiind@gmail.com
www.gauranshiindustries.com



VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 16 October 2026



ECI Orders Voter Roll Revision in 17 states and UTs, Assam among them

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

The Election Commission of India (ECI) has ordered a Special Summary Revision (SSR) of electoral rolls in 17 states and Union Territories, setting the stage for a nationwide exercise to update voter lists ahead of the 2027 qualifying date and upcoming Assembly elections.

The exercise will use January 1, 2027, as the qualifying date and focus on enrolling eligible citizens, particularly young and first-time voters, correcting errors in existing records and identifying duplicate or otherwise ineligible entries. The Commission has directed election officials to ensure that no eligible citizen is left out and no ineligible person is included in the electoral rolls.

Uttar Pradesh, Uttarakhand, Punjab, Manipur and Goa, all scheduled to hold Assembly elections in 2027, are among the jurisdictions covered by the exercise.

Full List of 17 States and Union Territories : The Special Summary Revision will cover the following 14 states and three Union Territories:

Andaman and Nicobar Islands, Assam, Bihar, Chhattisgarh, Goa,



Gujarat, Kerala, Lakshadweep, Madhya Pradesh, Manipur, Puducherry, Punjab, Rajasthan, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, Uttarakhand, West Bengal.

Assam is included despite the Commission's decision not to conduct the Special Intensive Revision (SIR) there.

The other jurisdictions are among those where the SIR has been completed, according to reports on the Commission's announcement.

Key Dates for Voters:

The Commission has announced the following schedule:

November 2, 2026: Deadline for rationalisation and rearrangement of polling stations.

November 12, 2026: Publication of draft electoral rolls.

December 11, 2026: Last date for filing claims and objections.

December 28, 2026: Deadline for disposing of claims and objections.

January 4, 2027: Scheduled publication of final electoral rolls.

The process will give voters an opportunity to check their registration details and seek inclusion or correction within the prescribed period. Applications for deletion of names will also have to follow the Commission's prescribed procedure.

SSR and SIR: What Is the Difference?

The Special Summary Revision updates existing electoral rolls, allowing eligible voters to be added and incorrect entries to be corrected or removed through the prescribed process. The Special Intensive Revision, by contrast, involves a more extensive verification and revision of electoral rolls.

The Commission had not conducted its regular annual SSR in 2026 as the SIR exercise was underway or being planned in different phases across several states. The latest decision seeks to resume the annual revision process in the jurisdictions covered by the new schedule.

The ECI has said that states and Union Territories where the SIR is ongoing or has recently been completed will receive a separate SSR schedule. Separate arrangements will also be announced for Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, and Ladakh, where the SIR had not begun, taking local conditions into account.

Electoral Rolls in Focus Ahead of Assembly Elections

The revision assumes significance as political parties prepare for the next round of Assembly elections. The accuracy and completeness of electoral rolls are central to ensuring that eligible citizens can exercise their right to vote.

The coming weeks will therefore be important for voters to verify their particulars, apply for inclusion if eligible, and raise objections or seek corrections before the final electoral rolls are published in January 2027.

US Hindu Community Alarmed by Foiled Mass Shooting Plot at Illinois Temple

Washington: The Hindu Swayamsevak Sangh-USA has expressed deep concern over an alleged plot to carry out a mass shooting at the Sri Venkateswara Temple in Aurora, Illinois, urging Hindu communities across the United States to remain vigilant and strengthen security measures. A 19-year-old man, identified as Alexandros Papourekis in the report, was arrested near Chicago in connection with the alleged plot. According to the report, the attack was thwarted after the suspect's firearm reportedly jammed and failed to fire. The organisation urged temples, community groups and families to maintain contact with local law enforcement, review security arrangements and promptly report threats or suspicious activities. It also called on political leaders to condemn anti-Hindu hatred, anti-Indian racism and threats against places of worship. Several US lawmakers, including Ro Khanna, Ami Bera, Jamie Raskin, Raja Krishnamoorthi, Shri Thanedar, Haley Stevens and Pramila Jayapal, condemned the alleged plot and stressed that everyone must be able to practise their religion without fear.



Prime Minister Narendra Modi and Union Sports and Youth Affairs Minister Mansukh Mandaviya during an interaction programme with the athletes of the Asian Games 2026, in New Delhi. Boxer Lovlina Borgohain and others are also seen.

Assam to Expand Nijut Moina Nijut Babu Schemes

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

Assam Chief Minister Himanta Biswa Sarma has announced plans to expand the state's Mukhya Mantrir Nijut Moina and Mukhya Mantrir Nijut Babu schemes, with the government considering an increase in monthly financial assistance to encourage students to continue their education.

Speaking at a programme on October 15 to distribute cheques for the October instalment, Sarma said the two initiatives together cover around 5.42 lakh students. The schemes aim to ease the financial burden on families, reduce school and college dropouts, and address social challenges such as child marriage and early motherhood. Under Nijut Moina, 4,39,598 girl students are covered, with Rs 48.22 crore earmarked for the first instalment. The Nijut Babu scheme supports 1,02,501 male students, with Rs 10.37 crore being disbursed as the first instalment.



More universities and nursing courses to be covered

Sarma said the schemes would be expanded next year to include students of Srimanta Sankardeva University, Auniati University, Krishnaguru Adhyatmik University and Pragjyotishpur University. Female students pursuing ANM, GNM and BSc Nursing courses will also be brought under the Nijut Moina scheme, he announced. The government will consider increasing the financial assistance under both initiatives. Students are also expected to receive the September instalment through Direct Benefit Transfer after the Durga Puja celebrations, according to the chief minister.

Education push to tackle child marriage

Highlighting the link between education and social development, Sarma said child marriage and early motherhood remained concerns in several districts. He referred to the state's campaign against underage marriage and said more than 10,000 people had been arrested in cases related to child marriage. The chief minister said the Nijut Moina scheme, launched in 2024, was intended to help girls remain in education rather than face pressure to marry early. He claimed that college enrolment among girls had risen and student dropouts had declined since the scheme's introduction. He also cited National Family Health Survey findings to point to a decline in child marriage.

The Nijut Babu scheme, meanwhile, seeks to encourage boys to pursue higher education and reduce the financial pressure on their families.

Focus on skills, startups and employment

Sarma urged students to attend classes regularly and make effective use of educational opportunities. He also called for stronger links between colleges, practical learning and entrepreneurship, advocating incubation centres and startup ecosystems in educational institutions. The chief minister further said the state had provided around 1.60 lakh government jobs over the past five years, while two lakh young people had been covered under a self-employment promotion scheme. He added that the government was working to attract investment and promote industrialisation to create more employment opportunities.

The planned expansion of the student assistance schemes is part of Assam's wider effort to improve access to higher education while addressing financial and social barriers that can interrupt students' academic journeys.

From Varanasi's Sacred Ghats to Dubai's Burj Khalifa Tinsukia Turns Durga Puja into a World of Wonders

Jan Jan Vichar
...✍Tinsukia

From the timeless spiritual charm of Varanasi to the towering skyline of Dubai, Assam's Tinsukia district is turning Durga Puja into a spectacular celebration of art, architecture and cultural diversity. This year, seven distinctive pandals are attracting attention with themes inspired by sacred destinations, royal palaces, modern landmarks and cherished childhood memories. Beyond traditional worship, these elaborate structures reflect how Durga Puja has evolved into a major cultural event, bringing communities together through creativity, craftsmanship and collective participation.

Seven themes, one festive spirit

One of the notable attractions is the Manav Kalyan Shri Marwari Durga Puja pandal, inspired by Assi Ghat in Varanasi. Its concept evokes the sacred atmosphere and cultural heritage of Kashi, offering visitors a glimpse of one of India's most revered spiritual destinations. At Sripuria Purvanchal Durga Puja, the theme Lost Childhood takes a different approach. Instead of monumental architecture, it focuses on nostalgia, innocence and the simple joys of growing up, inviting visitors to reconnect with memories of an earlier time. Modern architecture takes centre stage at Thanda Ghar Durga Puja, whose Dubai-inspired concept brings the glamour of a contemporary global city to Tinsukia. A similar fascination with iconic architecture shapes the Shah Colony Durga Puja pandal, inspired by Dubai's world-famous Burj Khalifa.

The celebrations also travel south to Tamil Nadu through Durgabari Durga Puja, which draws inspiration from the renowned Ramanathaswamy Temple in Rameswaram, celebrated for its distinctive temple architecture and religious significance. Royal India finds its expression at Chaliha Nagar Durga Puja, where Rajasthan's palatial heritage provides the central inspiration. The theme evokes the grandeur of royal residences, intricate decorative traditions and the state's rich cultural legacy. Meanwhile, Makum Road Durga Puja places its focus on Maa Baglamukhi, highlighting faith, divine power and the spiritual belief in overcoming negativity.

Together, these seven pandals illustrate the expanding creative canvas of Durga Puja in Assam. Ancient pilgrimage centres, South Indian temple traditions, royal architecture, global skyscrapers and personal memories have all found a place in this year's celebrations.

Indian Embassy Issues Advisory for Citizens in Saudi Arabia

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

The Indian Embassy in Riyadh has urged Indian nationals living in Saudi Arabia to remain calm, stay alert and follow safety instructions amid recent attacks targeting the kingdom. The advisory comes as flight operations face disruptions, with Air India and IndiGo cancelling services from Saudi Arabia, while Saudi carriers continue operating flights to India.

In a video message to the Indian community on Thursday, October 15, India's Ambassador to Saudi Arabia, Vipul, said that the Indian government had condemned attacks on civilian facilities and infrastructure in the kingdom. He expressed solidarity with the Saudi people and leadership and offered condolences to the families of those killed, along with wishes for the speedy recovery of the injured.

The ambassador said the embassy was in contact with the family of an Indian national who died in an attack on Riyadh airport on October 10. It was also coordinating with hospital authorities and the families of 11 Indian nationals who were injured in the incident.

With Riyadh airport closed, Air India and IndiGo had cancelled flights from across the kingdom, according to the ambassador. However, Saudi carriers Saudia, flynas and flyadeal were continuing to operate services to India. Travellers could also consider routes through neighbouring Gulf countries, subject to flight availability and prevailing conditions.

The embassy has established helplines to assist Umrah pilgrims affected by the disruption. Indians planning to travel to Saudi Arabia have been advised to take possible flight cancellations and other interruptions into account before making travel arrangements.

Urging the community to exercise caution, Ambassador Vipul said people should remain indoors in the event of an aerial attack. He also warned Indian nationals against sharing photographs or videos of the attacks, noting that doing so could violate Saudi law and lead to legal complications.

Meanwhile, India's Ministry of External Affairs reiterated its condemnation of attacks on civilian infrastructure in Saudi Arabia, describing them as "unacceptable" and expressing solidarity with the kingdom in safeguarding its sovereignty.

The situation has disrupted travel between India and Saudi Arabia, affecting passengers, including pilgrims. Indian nationals have been advised to follow official announcements, remain vigilant and stay in touch with the embassy for assistance and updated travel information.

AIUDF Leader Alleges Vote Rigging in Nagaon Bypoll

Jan Jan Vichar
...✍Samaguri



The Nagaon Lok Sabha bypoll has come under fresh political controversy after former Dhing MLA Aminul Islam alleged that the BJP manipulated votes to secure victory for its candidate, Devasish Sharma, claiming that AIUDF chief Badruddin Ajmal was the actual winner.

Islam levelled the allegations while joining Ajmal at a thanksgiving rally in Samaguri, where the leaders thanked voters for their support. He claimed that the people had elected Ajmal but that the BJP had allegedly ensured Sharma's victory through electoral manipulation.

The former MLA further alleged that BJP workers, in coordination with independent agents, deployed 16 to 20 agents at a single polling station to facilitate alleged irregularities. He also claimed that votes were cast in the names of people working outside Assam.

Islam alleged that between one and two lakh votes belonging to Muslims working outside the state had been fraudulently cast. However, he did not provide supporting evidence for these claims in his statement, and the allegations could not be independently verified.

Political rhetoric intensifies

The remarks have added a new dimension to the political contest between the AIUDF and the BJP in Assam. Allegations of electoral malpractice are serious and require substantiation through verifiable evidence and the appropriate legal or electoral mechanisms.

At the same rally, Hafiz Ilyas Hussain Ansari thanked the people of Samaguri for what he described as a change in the constituency. He also predicted a massive defeat for the BJP in Dhubri in a future election, claiming the party would lose by a margin of 20 lakh votes.

The claims and predictions reflect the political rhetoric at the rally and should not be treated as established facts.

The central question remains whether the allegations of vote manipulation will be backed by evidence that can be examined by the relevant authorities.

India Imposes Windfall Tax on Petrol, Diesel Exports

New Delhi : The Central Government has imposed a windfall tax on petrol and diesel exports, setting the levy at Rs 2.50 per litre for petrol and Rs 8.50 per litre for diesel. The revised rates came into effect on Friday, October 16, following an official government order issued late Thursday night.

The decision brings fresh changes to the tax framework governing the export of petroleum products. The levy is intended to capture extraordinary gains under exceptional market conditions, particularly when exporters benefit from unusually favourable prices.

According to the notification cited in the report, the new rates apply to exported petrol and diesel. The measure could affect the cost calculations of refiners and exporters, depending on international fuel prices, export volumes and prevailing market conditions.

A windfall tax is generally imposed when businesses earn unusually high profits because of exceptional market circumstances. Governments use such levies to capture a portion of these gains rather than allowing the entire benefit to accrue to producers or exporters.

The impact of the latest decision will depend on how petroleum exporters adjust their pricing and export strategies in response to the additional tax burden. The move does not, by itself, establish that domestic petrol and diesel retail prices will change.

The revised levy marks the latest government intervention in the taxation of petroleum exports, with its effects likely to be assessed against global energy prices and the economics of domestic refining.

EDITORIAL

Reservation Beyond Religion

India's reservation policy rests on a fundamental principle: equality is not achieved merely by treating everyone alike; it requires addressing the disadvantages that prevent some communities from enjoying equal opportunities. The Supreme Court's ruling on reservation benefits for converts to Islam brings this principle into focus, raising difficult questions about the relationship between religious conversion, community identity and social backwardness.

On October 15, 2026, the Supreme Court dismissed Tamil Nadu's challenge to a Madras High Court judgment that struck down a state government order concerning reservation certificates for people who converted from specified Hindu communities to Islam. The central legal issue was whether their previous backward-class status could, by itself, establish eligibility under notified Backward Class Muslim categories.

The distinction matters. Scheduled Caste status is governed by specific constitutional provisions and eligibility restrictions under the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950. Other Backward Classes, however, are identified under a different framework, based on recognised social and educational backwardness. Neither category permits eligibility to be assumed without regard to the applicable law.

The Court's position underscores the importance of legally defined criteria and the integrity of reservation policy. Benefits cannot automatically follow an individual from one recognised community to another merely because both are considered backward. Such recognition must comply with the rules governing the relevant category. Yet, the broader question deserves equal attention. Does conversion necessarily end the social disadvantages a person has experienced?

Festival Of Barricades: Who Is Covered In Viksit Bharat?

Jan Jan Vichar

...✍Patralekha Chatterjee

Last week, as I walked around, relishing Delhi's festival of barricades, watching young activists and Opposition coalitions throng the streets to protest alleged electoral manipulation, notching 10,000 steps, the visual punchline was impossible to miss. Outside Nirvachan Sadan, the headquarters of the Election Commission of India in the heart of Lutyens' Delhi, there was a wall of yellow steel barricades effectively sealing the building off from the public. Behind this cordon, half-hidden by trees, hung an official placard telling Indian citizens to "celebrate the biggest festival of democracy". There were other signs carrying the promise that "Every Voter Counts. Wherever they Are".

Down the road, there was a massive posse of Delhi Police and paramilitary forces, flanked by microphone-wielding media and freelance photographers hired by the police to document the unrest. Sipping adrak chai, the incongruity of the scene struck me when one police-hired photographer casually confided that these protests were a welcome "lean-season" gig before the wedding photography season sets in.

In barricaded Delhi, public announcements warned people of the consequences of going too close to the protesters. I had rarely seen so many people in uniform gathered in one place. What leapt out was how tightly disenfranchisement was bound to India's "developed" country aspiration by 2047. Disenfranchisement and development are not binaries because the citizen opposing one is often demanding the other at the same time. Those behind the barricades are not rejecting Viksit Bharat. They want to make sure they are counted inside it.

The streets around the Election Commission brought together things that are usually discussed separately: the right to be counted, the right to protest without fear, behaviour of the police, erosion of trust and safety of women in public spaces. At the centre of the protests is a dispute over who gets to vote. India's Election Commission, the constitutional body responsible for overseeing elections, has removed more than 130 million names from draft electoral rolls, including names of people who had died, relocated or could not be traced through its Special Intensive Revision (SIR), a large-scale exercise to verify voter lists. Protesters argue that eligible voters are being wrongly excluded and that the process lacks transparency. They are demanding the resignation of chief election commissioner Gyanesh Kumar, a halt to the exercise and the restoration of earlier voter lists. Citizens say they need not prove every deletion wrongful before they can demand transparency and peacefully protest. The past week has seen extraordinary security, transport restrictions and police high-handedness. Heartbreaking accounts of mass detentions, brutal beating of young Indians demanding greater transparency in electoral-roll revision, Internet shutdowns, restrictions on mobility and harassment of journalists have dominated news coverage and social media. Despite detentions, protesters in Delhi and other Indian cities are not giving up. The courageous, and strategically brilliant Neha Bora, 29, of the All-India Students' Association (AISA) and the youth-led Cockroach Janta Party have flipped the protest playbook, emerging as inspiring leaders, and bringing a generational edge to a wider mobilisation against alleged electoral manipulation. On October 12, after a weekend filled with huge protests in Delhi, Congress leader and Leader of the Opposition in the Lok Sabha, Rahul Gandhi, alongside other Opposition figures, activists and student groups, led another huge procession through Delhi, this time towards the Supreme Court. As I write, Delhi Police have denotified Jantar Mantar as a protest site. The decision has been challenged in the court. CJP leaders Saurav Das and Ashutosh Ranka have been remanded in five days' judicial custody. Security forces and barricades remain. Yet, tellingly, while the state can cordon off a stretch of road, it cannot so easily contain the questions that bring people there. The massive removal of voters has moved beyond a purely political battle and risks hampering economic and human development (Vikas) through institutional data-linking. West Bengal and Bihar governments, for example, have sought to link electoral roll deletion to welfare access, creating the risk that an administrative voting decision can affect food security and other benefits. Citizens struck off the rolls potentially face exclusion from vital welfare programmes, and subsidised rations — even as the linkage remains under challenge in court. How scientific is this "purification" of electoral rolls? The government invokes the threat of infiltrators; the Election Commission has cited the exclusion of "foreign illegal immigrants" as one rationale for the SIR. Yet, it leans heavily on opaque automated software whose "no mapping" and "logical discrepancies" filters have flagged even prominent public figures, raising questions about how ordinary citizens with fewer resources can challenge errors. Another anomaly: Form 6, intended for new electors, requires a declaration that the applicant seeks inclusion as a new voter, complicating re-enrolment for existing voters. Ordinary citizens and their advocates have hit the streets, braving police barricades, tear gas and severe restrictions, because they fear permanent political lockout. Going missing from the draft rolls in a critical election cycle can effectively silence their democratic voice for that entire term, as appeals are often too slow, or burdensome to address in time. Once a government is formed without their input, it has no electoral incentive to direct resources or development to their communities. For dalits, adivasis and women, the vote represents decades of struggle for dignity. Data showing that the SIR disproportionately deleted mobile labourers, women who relocated after marriage and other marginalised groups have fuelled fears of a structural rollback of social progress. Indeed, it is precisely because people have a stake in India's future that they insist on having a say. Prime Minister Narendra Modi's phrase "We will do it" is a promise about collective national effort. The street is asking a surprisingly simple question of Viksit Bharat: Who is included in that "we"? A country asking its citizens to imagine a transformed India cannot be surprised when those citizens ask whether they will still have a place in determining that transformation

Our Durga doesn't fast, she feasts

Jan Jan Vichar
...✍Partha Sinha



She brings the children: Lakshmi, Saraswati, Ganesh with his belly, Kartik with his peacock and too-careful hair, all pressed into one ekchala like a family in an Ambassador bound for her parents' house. The icon is a family photograph before it is theology.

Last month, in Liluah, a few thousand mobile phones rose into the dark like obedient moons. Bageshwar Baba had asked for a show of lights. Bengal, he confessed, hurt him. Meat should not be sold near the Goddess; those who ate it on holy days were hypocrites. Then the phrase that gave the game away: Free Bengal, he said, this Navratri.

The word sat in the sentence like a stranger at a family wedding: Correctly dressed, entirely wrong. Bengal knows Navratri. It simply does not live there. Bengal lives in Pujo: Mahalaya before dawn, bodhon under the bel tree, the long ache of Nabami night, the terrible clarity of Dashami morning. The two calendars overlap the way a map of Kolkata overlaps a memory of it. Roughly.

What followed was farce with the weight of a referendum. Congress filed police complaints. Even the BJP's own leaders hurried to defend the goat-sacrifice prasad. And Chief Minister Suvendu Adhikari went to Kalighat on Kaushiki Amavasya and sat down to basanti pulao, fried fish and a fish head offered to Ma Kali. "As a Bengali," he said, "I accept the bhog offered to Maa with fish." A saffron Chief Minister eating saffron pulao to rebut a saffron sadhu. Bengal likes its irony slow-cooked.

The quarrel was about something older than the plate.

Begin with the arrival. Elsewhere, pilgrims climb to the Goddess. In Bengal, she comes down. She leaves Kailash, the ash-smeared husband with his ganja and uncertain income, and travels to her father's house, where Menaka has been waiting since the month of Bhadro. She brings the children: Lakshmi, Saraswati, Ganesh with his belly, Kartik with his peacock and too-careful hair, all pressed into one ekchala like a family in an Ambassador on the way to the parents' home. The icon is a family photograph before it is theology.

Ramprasad and Kamalakanta sealed this intimacy in song: Agamani for the coming, bijoya for the going. Their Menaka is a Bengali mother who has heard that her son-in-law is a vagabond and her daughter has grown thin. She makes the oldest promise mothers make: This time, when Uma comes, I will not send her back. A society that married its daughters young and far gave its Goddess the itinerary of a naiyor (homecoming). Four days at her parents'. Then sindoor, tears, the river.

So the Bengali in a pandal does not merely bow. He visits. He checks her face. Thinner this year? You do not critique a deity's makeup. You worry over a niece's.

Yet the loudest sound in that pandal is the Chandi. At four on Mahalaya morning, Birendra Krishna Bhadra rises from the radio, and half of Bengal, most of whom have never opened the Markandeya Purana, knows every cadence of Ya devi sarvabhuteshu in the dark. At Sandhi Puja, in the 48 minutes when Ashtami bleeds into Nabami, 108 lotuses are offered as Chamunda bursts from the Goddess's brow. The dhak enters a trance; so does the para. The same face holds a homesick daughter and a 10-armed fury with a trident through a buffalo's heart.

Bengal never felt compelled to choose. That is the Shakta inheritance of the delta: Annapurna in the kitchen, Kali on the burning ghat, no contradiction needing repair. The Goddess eats what field and river offer; fish, as the old joke goes, is a vegetable that swims. Nabami brings mutton cooked without onion or garlic, which Bengal calls, with a straight face, niramish mangsho. Vegetarian meat. The Baba called it hypocrisy. A semiotician might call it range.

Look at what she is made of. Where other forms of the Devi endure in stone, Bengal's autumn Goddess is river clay and straw, built to dissolve. In Kumartuli, tradition still asks that she begin with earth from a sex worker's doorstep. The holiest body is incomplete without soil from a threshold society calls impure. A god with an expiry date turns worship into hospitality. You do not build a permanent room for a guest. You cook for her, and you weep at the gate.

In much of the north the season is a fast: nine nights of vrata, ending with Ravana going up in flames. Pujo is a feast that happens to have a priest. Khichuri, labra, new clothes counted by the day, addas that outlast the drums. One ends in a victory parade. The other ends on a railway platform.

Why, then, the guard dog at the gate? Because Bengal has lost much of what once certified its importance. The mills closed, the head offices took the evening flight west, and the bhadralok discovered that India could think without him. What remained was cultural capital, in Bourdieu's sense, and when the money leaks away a class guards the last good silver. Go to CR Park on Ashtami: The Kali Mandir on its little hill and, a short walk away, the fish market roaring with bhetki and rui. An embassy, with its consulate. The farther the probasi lives from the Ganga, the more fiercely he insists on fish in his pujo meal.

So when a sadhu calls Pujo "Navratri", he is offering a translation, and every translation proposes an owner. Homogenisation rarely arrives as decree. It comes as kindly correction. Bengal hears in that kindness the soft click of a lock being changed.

Bengalis are not innocent. We have no business looking at garba with the condescension of people who read the menu in French. We cheer the slaying of Mahishasura and seldom ask the Asur villages of Purulia why they spend these days in mourning. Every family photograph has someone cropped out of the frame.

On Dashami, the image will tilt into the river at Bagbazar, the children going with her. Women will smear sindoor on her cheek and then on each other's, as if to keep a little of her. Someone will call out ashchhe bochhor abar hobe, as though it were a promise and not a prayer.

She was never ours to lend. We only ever had her for four days.

Ramayana Goes Global

Jan Jan Vichar
...✍Entertainment Desk



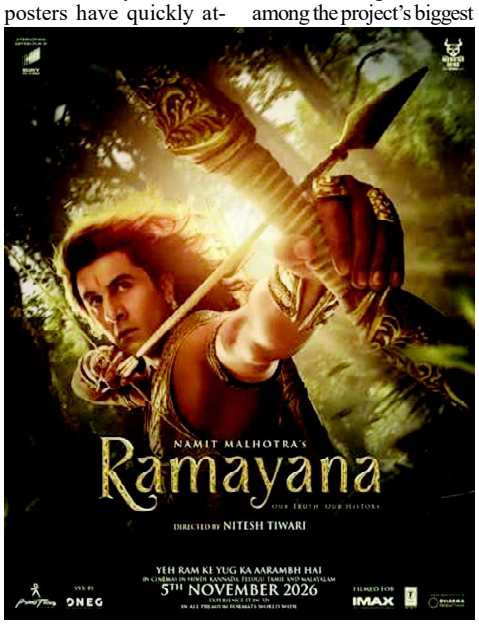
Ranbir Kapoor and Yash Lead the Epic's International Push

The timeless Indian epic Ramayana is preparing for a global cinematic journey. With the release of its international trailer and striking new character posters featuring Ranbir Kapoor as Lord Rama and Yash as Ravana, Ramayana Part 1 is building anticipation among audiences in India and overseas.

Released on October 15, the 2-minute-29-second international trailer offers a glimpse into the film's grand visual world, action sequences and larger-than-life portrayal of one of India's most enduring mythological narratives. The trailer is available in English, Hindi, Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam, signalling the makers' ambition to reach audiences across linguistic and cultural boundaries.

Rama and Ravana take centre stage

The newly unveiled posters have quickly attracted attention on social media. Ranbir Kapoor appears as Rama, wielding a bow and presenting a powerful image of the revered prince. Yash, meanwhile, appears as Ravana, standing amid fallen warriors with a spear in hand. The contrasting visuals offer an early glimpse of the film's central conflict between two iconic figures.



The casting has been among the project's biggest talking points. Sai Pallavi plays Sita, Sunny Deol portrays Hanuman, and Ravi Dubey takes on the role of Lakshmana. Directed by Nitesh Tiwari, the film seeks to bring the epic to the screen through a combination of mythology, large-scale action and contemporary cinematic technology.

An international release strategy

The film is being positioned for overseas audiences under the title Ramayana: The Rise of Legend. Advance bookings have opened in international markets, according to the announcement accompanying the trailer. The reported overseas release is scheduled for November 5, ahead of its Indian theatrical debut planned for Diwali.

The international distribution effort is backed by Sony Pictures' global distribution network. Production brings together Namit Malhotra's Prime Focus Studios, the visual-effects company DNEG and Yash's Monster Mind Creations.

The involvement of DNEG, known for its work in visual effects, points to the scale of the film's technical ambition. However, the film's ultimate impact will depend not only on spectacle but also on how convincingly it presents a story deeply embedded in India's cultural memory.

More than mythology on screen

For generations, Ramayana has travelled across languages, regions, performing traditions and religious practices. Its characters have been interpreted differently across communities, making any large-scale adaptation both an artistic opportunity and a considerable responsibility.

The challenge for the filmmakers is to balance cinematic grandeur with the emotional and philosophical depth of the epic. International audiences may be drawn by the stars, action and visual effects, but the story's enduring appeal lies in its exploration of duty, sacrifice, loyalty, power and the consequences of moral choices.

With Ranbir Kapoor and Yash at the forefront, Ramayana Part 1 is seeking to transform a familiar Indian narrative into a global theatrical event. Whether the film achieves that ambition will become clearer when audiences finally experience the epic on the big screen.

DS D.S. ASSOCIATES
TAX CONSULTANTS
TRUSTED ADVISORS
ONE- STOP SOLUTION
ALL YOUR TAX & FINANCE NEEDS UNDER ONE ROOF
Expert, reliable and timely solutions for individuals, businesses & startups — handled by experienced professionals you can trust.
OUR SERVICES
Income Tax Returns
GST Registration & Filing
Audit
Accounting & Book Keeping
Loans
Insurance
Company Registration
Import & Export Compliance
Trademark Registration
FSSAI Registration
Subsidy Related Works
Documentation Services
...AND MANY MORE SERVICES
CONTACT US TODAY
E-Mail : dssalestax@gmail.com
Dhaneshwar Choudhary 70026 82705
Subhash Choudhary 84728 20656

Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary